वार्षिक 300/- रूपए
website : www.vhp.org

मूल्य 15 रूपए
कुल पृष्ठ - 28

राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

फरवरी 16-28, 2026

हिन्दू विश्व

हिन्दू धर्मरक्षक वीर शिवाजी भारत की प्रेरणा हैं

@eHinduVishwa

/HinduVishwa

कर्णावती में आयोजित मातृशक्ति/दुर्गावाहिनी की अ.भा. बैठक पर उपस्थित विहिप सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे, केन्द्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार जी, मातृशक्ति अ.भा. संयोजिका श्रीमती मीनाक्षी पिशवे जी तथा प्रबंध समिति व प्रन्यासी मण्डल सदस्य श्रीमती मीना भट्ट जी तथा देशभर से आईं क्षेत्र व प्रांत की संयोजिकाएं

देवास (म.प्र.) में समरसता गोष्ठी को संबोधित करते विहिप केन्द्रीय सह संगठन महामंत्री श्री विनायकराव देशपाण्डे तथा गोष्ठी में उपस्थित मातृशक्ति एवं बन्धु

भोपाल में मध्यभारत प्रांत के सेवा विभाग द्वारा आयोजित सेवा कुंभ 2026 को संबोधित करते विहिप केंद्रीय सहमंत्री श्री आनंद जी हरबोला

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

हर्ष ध्वनि करती हुई जल से पूर्ण ये सरिताएँ कल-कल करती हुई प्रवाहित हो रही हैं। हे ऋषे! ये सरिताएँ क्या कहती हैं? इनसे पूछें। क्या ये इन्द्रदेव का गुणगान करती हैं? उन इन्द्रदेव के आयुध जल को आवृत करने वाले मेघों को विदीर्ण करते हैं।
- ऋग्वेद

16-28 फरवरी, 2026
फाल्गुन कृष्ण- शुक्ल पक्ष
पिंगल संवत्सर
वि. सं. - 2082, युगाब्द- 5127

सम्पादक
विजय शंकर तिवारी

सह सम्पादक
मुरारी शरण शुक्ल
मो. - 7217685539

परामर्शदाता
सर्वश्री राजेन्द्र शर्मा,
विजय कुमार,
रवि पाराशर

व्यवस्थापक
श्री दूधनाथ शुक्ल
मो. - 09582555152

सज्जा
श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम, प्रभाग - 6
रामकृष्णपुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152

011-26178992, 011-26103495
hinduvishva@vhp.org

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए	$ 75 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित	
एक प्रति	15/-
वार्षिक	300/-
त्रिवर्षीय	750/-
पंचवर्षीय	1,200/-
दसवर्षीय	2,250/-
पन्द्रह वर्षीय	3,100/-

पत्रिका की सदस्यता हेतु क्यूआर कोड स्कैन करें, उसका स्क्रीन शॉट और अपना पता व्यवस्थापक को 9582555152 नम्बर पर भेजें।

वैधानिक सूचना
- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

कुल पेज - 28

उत्तराखंड में यूसीसी लागू हुए एक साल पूरा	08
अयोध्या श्री राम मंदिर वैश्विक शांति और समृद्धि की नींव	10
भारतीय परम्पराओं का अनुपालन कर हमें संयुक्त परिवारों को बचाना होगा	13
हिन्दुओं को विभाजित करके अपनी राजनीति साधने के प्रयास में विपक्ष	15
दुनियाँ जल के वैश्विक दिवालियापन की ओर बढ़ रही है	17
असमय होता हृदयाघात	19
दक्षिण के ऐतिहासिक कुंभ में 250 साल बाद जुटे लाखों श्रद्धालु, क्या है निहितार्थ?	21
दिमाग को मजबूत करने के उपाय	22
हेमू कालाणी के 83वें बलिदान पर अर्पित की पुष्पांजलि	23
विहिप - 'मातृशक्ति/दुर्गावाहिनी' की दो दिवसीय अ.भा. बैठक	24
अंश और अंशिका को खोजने वाले बजरंग दल कार्यकर्ताओं का सम्मान	25
विश्व हिंदू परिषद ने किया समरसता गोष्ठी का आयोजन	26

सुभाषित

राजा वेश्या यमश्चाग्निः तस्करो बालयाचकौ।
पर दुःखं न जानन्ति, अष्टमो ग्रामकण्टकः।।

राजा, वेश्या, यमराज, अग्नि, चोर, छोटा बच्चा, भिखारी और कर वसूल करने वाला ये आठों कभी दूसरों का दुःख नहीं समझ सकते।

सम्पादकीय

विजय शंकर तिवारी

मलप्पुरम का महामहम भारत के भविष्य की साँस्कृतिक दिशा

केरल के मलप्पुरम जिले में लगभग 260 वर्षों के अंतराल के बाद आयोजित हुआ महाकुंभ–जिसे केरल में महामहम कहा जाता है–समकालीन भारत के सामाजिक–साँस्कृतिक परिदृश्य में एक महत्वपूर्ण घटना के रूप में दर्ज हो गया है। 25 लाख से अधिक श्रद्धालुओं की भागीदारी, भरतपुरा नदी में आस्था–स्नान और इसमें युवा चेहरों की उल्लेखनीय बहुलता–ये सभी तत्व मिलकर इस आयोजन को केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भविष्य की दिशा बताने वाला संकेत बना देते हैं।

मलप्पुरम वह जिला है, जहाँ इतिहास की परतों में टीपू सुल्तान के काल के अनेक आक्रमणों का उल्लेख मिलता है। आज यह क्षेत्र लगभग 65 प्रतिशत मुस्लिम जनसँख्या वाला माना जाता है। ऐसे ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों के बीच इतने विशाल, शांतिपूर्ण और अनुशासित साँस्कृतिक आयोजन हिंदुओं की क्षमता को रेखांकित करता है।

भरतपुरा नदी और साँस्कृतिक स्मृति

महामहम के दौरान भरतपुरा नदी में स्नान केवल धार्मिक कर्मकांड नहीं था; वह साँस्कृतिक स्मृति का पुनर्स्मरण था। नदियाँ भारतीय सभ्यता में जीवन, निरंतरता और समन्वय का प्रतीक रही हैं। जब लाखों श्रद्धालु अनुशासन और गरिमा के साथ नदी तट पर एकत्र होते हैं, तो यह दृश्य बताता है कि आस्था आज भी सामाजिक व्यवस्था के साथ सामंजस्य बिठा सकती है। यह संदेश खासकर उस समय महत्वपूर्ण हो जाता है, जब आधुनिकता को अक्सर परंपरा के विपरीत खड़ा कर दिया जाता है।

युवाओं की उपस्थिति : भविष्य की कुंजी

इस महामहम की सबसे उल्लेखनीय विशेषता रही युवा पीढ़ी की सक्रिय भागीदारी। तकनीक–सक्षम, वैश्विक दृष्टि रखने वाला यह युवा वर्ग जब अपनी परंपरा से जुड़ता दिखाई देता है, तो यह धारणा टूटती है कि आधुनिकता का अर्थ अपनी जड़ों से दूरी है। वास्तव में, आज का युवा अर्थ और पहचान की खोज में है–और उसे यह बोध हो रहा है कि साँस्कृतिक आत्मविश्वास के बिना कोई भी समाज दीर्घकालिक प्रगति नहीं कर सकता। यह पीढ़ी न तो अतीत में फँसी है, न ही अंधी नकल की पक्षधर। वह संतुलन चाहती है–जहाँ विज्ञान और सँस्कृति, विकास और मूल्य, दोनों साथ–साथ चलें। महामहम में युवाओं की बहुलता इसी संतुलन की आकांक्षा का संकेत है।

इतिहास से सीख, भविष्य की ओर कदम

मलप्पुरम का इतिहास जटिल रहा है, परंतु इस महामहम ने केरल की कम्यूनिस्ट सरकार को संकेत दे दिया है की सनातन जीवंत सँस्कृति है, जिसे षड्यंत्रों के जाल में लंबे समय तक बांधा नहीं जा सकता। अपनी साँस्कृतिक पहचान की सकारात्मक अभिव्यक्ति हिंदुओं के स्वभाव में है, जो हिंदू परंपराओं और संविधान को समेट कर अभिव्यक्त होता है।

भारत के भविष्य के संकेत

मलप्पुरम का महामहम भारत के भविष्य को लेकर कई स्पष्ट संकेत देता है –

- ❖ पहला, भारत की साँस्कृतिक चेतना भूगोल या जनसांख्यिकी की सीमाओं में बँधी नहीं है।
- ❖ दूसरा, युवा पीढ़ी अपनी पहचान को लेकर आत्मविश्वासी और जागरूक हो रही है।
- ❖ तीसरा, आस्था और आधुनिकता के बीच टकराव नहीं, बल्कि समन्वय संभव है।
- ❖ चौथा, बड़े सांस्कृतिक आयोजन सामाजिक संवाद के मंच बन सकते हैं, यदि उन्हें जिम्मेदारी से संचालित किया जाए।

केरल के मलप्पुरम में 260 वर्षों बाद आयोजित हुआ महामहम किसी एक राज्य या समुदाय की घटना नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चेतना का दर्पण है। 25 लाख श्रद्धालु, भरतपुरा नदी में आस्था–स्नान और युवाओं की व्यापक भागीदारी यह स्पष्ट संकेत देती है कि भारत का भविष्य अपनी सँस्कृति से जुड़ा होगा, विविधता के साथ आत्मविश्वासी होगा और लोकतांत्रिक मूल्यों के साथ आगे बढ़ेगा।

तकनीक–सक्षम, वैश्विक दृष्टि रखने वाला यह युवा वर्ग जब अपनी परंपरा से जुड़ता दिखाई देता है, तो यह धारणा टूटती है कि आधुनिकता का अर्थ अपनी जड़ों से दूरी है। वास्तव में, आज का युवा अर्थ और पहचान की खोज में है–और उसे यह बोध हो रहा है कि साँस्कृतिक आत्मविश्वास के बिना कोई भी समाज दीर्घकालिक प्रगति नहीं कर सकता। यह पीढ़ी न तो अतीत में फँसी है, न ही अंधी नकल की पक्षधर। वह संतुलन चाहती है–जहाँ विज्ञान और सँस्कृति, विकास और मूल्य, दोनों साथ–साथ चलें। महामहम में युवाओं की बहुलता इसी संतुलन की आकांक्षा का संकेत है।

शिवाजी न होते तो सुन्नत होती सबकी

मुरारी शरण शुक्ल
सह सम्पादक हिन्दू विश्व

कानपुर के कवि भूषण ने अपनी दो ही पंक्तियों में छत्रपति शिवाजी महाराज का सटीक वर्णन करते हुए कहा कि –

"काशी की कला जाती,
मथुरा मसीत होती।
अगर शिवाजी न होते,
तो सुन्नत होती सबकी।।"

भूषण अर्थात् तिकवांपुर के भूषण त्रिपाठी ने साफ कहा कि शिवाजी की खड़ग ने रक्षित कर दिया, अन्यथा मतांतरण सबका ही हो जाता।

गागा भट्ट ने कराया राज्याभिषेक

मिथिला के गागा भट्ट पैदल चलकर पुना पहुँचे। गागा भट्ट उस समय के देश के सबसे बड़े विद्वान थे, उन्होंने कहा कि मैं कराउंगा राज्याभिषेक, यही तो है हिन्दुओं का असली राजा। जब सबकी तलवारें कुंद हो रही थी, ऐसे में इस शिवाजी नाम के बालक ने अद्भुत शौर्य प्रकटाया है, शत्रुओं को मिट्टी में मिलाकर, अपने पुरुषार्थ से राज्य अर्जित किया है, यह छत्रपति होगा, छत्रपति शिवाजी महाराज। उस समय का समाज राज्याभिषेक के बिना राजा किसी को मानता नहीं था, इसी कारण पराजय के बाद भी शिवाजी का राज्याभिषेक रोकना चाहते थे, जिससे उन्हें सामाजिक मान्यता न मिले। स्थानीय ब्राह्मणों को पराजित मुस्लिम शासकों ने धमकाया था कि शिवाजी का राज्याभिषेक न करायें, जिसके कारण स्थानीय ब्राह्मणों ने राज्याभिषेक कराने से मना कर दिया था, ऐसे में निर्भीक और उद्भट विद्वान गागा भट्ट का आना और शिवाजी का राज्याभिषेक करवाना, इतिहास की बहुत बड़ी घटना थी।

हिन्दी विरोध या शिवाजी का अपमान?

शिवाजी का नाम लेकर, जो राजनीति में आए, शिव सैनिक कहलाए, वो पहले बिहार का, फिर यूपी–बिहार का, बाद में उत्तर भारत का विरोध करने लग गए। इससे भी भारत माता को अपमानित करने की उनकी साध पुरी नहीं हुई, तो हिन्दी विरोध पर उतर आए, हिन्दी भाषियों पर आक्रमण करने लग गए। वो शायद यह भूल गए कि शिवाजी ने हर उस प्रतिमान का सम्मान किया, जो अपना था, अपने देश का था, अपने धर्म का था। चाहे वह भाषा हो, क्षेत्र हो, पर्व–उत्सव हो, मंदिर हों, गाय हो, नारी हो, या श्रद्धा के कोई अन्य केन्द्र हों। शिवाजी को अपना देश और धर्म बहुत प्रिय था, प्राणों से भी प्रिय था। ऐसे में हिन्दी का विरोध छत्रपति शिवाजी का अपमान है। हिन्दी और मराठी कभी एक–दूसरे की विरोधी नहीं रहीं, दोनों एक ही देवनागरी लिपी में लिखी जाती हैं और दोनों का ही जन्म संस्कृत से हुआ है, तो दोनों सहचरी हैं, दोनों सहोदर हैं, विरोध का औचित्य ही नहीं है।

उत्तर भारतीय विरोध बनाम भूषण और गागा भट्ट

शिवाजी पर जो प्रसिद्ध नाटक का मंचन होता है, महानाट्य जाणता राजा, बाबासाहेब पुरंदरे द्वारा लिखित यह नाटक अपनी ऐतिहासिक भव्यता, जीवंत प्रदर्शन, 200 से अधिक कलाकारों, पशुओं और विशाल सेट्स के लिए जाना जाता है, जो शिवाजी महाराज के स्वराज्य स्थापना की गाथा को प्रस्तुत करता है, वह नाट्य उत्तरप्रदेश के कानपुर के त्रिविक्रमपुर गाँव निवासी कवि भूषण की हिन्दी कविता से ही आरम्भ होता है।

शिवाजी पर सर्वोत्तम कविता है यह

इन्द्र जिमि जंभ पर, बाडब सुअंभ पर,
रावन सदंभ पर, रघुकुल राज हैं।
पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहस्रबाह पर राम–द्विजराज हैं।।
दावा द्रुम दंड पर, चीता मृगझुंड पर,
भूषन वितुंड पर, जैसे मृगराज हैं।
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यौं मलिच्छ बंस पर, सेर शिवराज हैं।।

जब इस कविता का कोरस गाया जाता है, तो सबका सीना गर्व से चौड़ा हो जाता है, मस्तक गौरव से उपर उठ जाता है। यह कविता वस्तुतः अवधी मिश्रित हिन्दी में रची गई है, जो आज शिवाजी की पहचान के साथ जुड़ गई है।

शिवाजी के किलों पर विजय

शिवाजी महाराज ने कई किलों पर विजय प्राप्त की थी, जिनमें से कुछ महत्वपूर्ण किले हैं : तोरणा, रायगढ़, राजगढ़, प्रतापगढ़, शिवनेरी, लोहागढ़, सिंधुदुर्ग, सिंहगढ़, जुन्नार, चाकन और पुरंदर।

तोरणा किला : यह किला शिवाजी महाराज द्वारा जीता गया पहला किला था। छत्रपति शिवाजी महाराज ने 1646 में, केवल 16 वर्ष की आयु में तोरणा किले पर विजय प्राप्त कर अपनी पहली बड़ी सैन्य सफलता अर्जित की और मराठा साम्राज्य की नींव रखी। पुणे के पास स्थित इस दुर्ग को जीतकर शिवाजी महाराज ने बीजापुर सल्तनत को चुनौती दी थी।

रायगढ़ किला : यह किला शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक स्थल था और उनकी राजधानी भी। छत्रपति शिवाजी महाराज ने 1656 में जावली के मोरे शासकों को हराकर "रायरी" नामक पहाड़ी किले पर विजय प्राप्त की और इसका नाम "रायगढ़" रखा। यह किला मराठा साम्राज्य की अजेय राजधानी बना, जहाँ 6 जून 1674 को शिवाजी का राज्याभिषेक हुआ। यह विजय हिंदवी स्वराज्य की स्थापना और मुगलों को चुनौती देने में निर्णायक साबित हुई।

प्रतापगढ़ किला : प्रतापगढ़ किले पर छत्रपति शिवाजी महाराज की विजय (10 नवंबर 1659) मराठा इतिहास की एक निर्णायक घटना थी। चतुर रणनीति अपनाते हुए शिवाजी ने घने जंगलों में बीजापुर के ताकतवर सेनापति अफजल खान को फंसाया और द्वंद्वयुद्ध में उसे मार गिराया। इस विजय ने न केवल मराठा शक्ति को स्थापित किया, बल्कि गोरिल्ला युद्ध की सर्वोच्चता भी सिद्ध की।

सिंहगढ़ किला : यह किला शिवाजी महाराज के सेनापति तानाजी मालुसुरे द्वारा मुगलों के खिलाफ लड़ी गई सिंहगढ़ की लड़ाई के लिए प्रसिद्ध है। यह किला शिवाजी महाराज द्वारा मुगलों के खिलाफ लड़ी गई एक महत्वपूर्ण लड़ाई के लिए जाना जाता है, जिसमें तानाजी मालुसुरे का बलिदान हुआ था।

पुरंदर किला : शिवाजी महाराज ने इस किले पर भी विजय प्राप्त की थी। शिवाजी महाराज ने 1646 के आसपास बीजापुरी शासन के दौरान पुरंदर किले को अपनी कूटनीतिक और सामरिक बुद्धिमत्ता का उपयोग करके अपने अधिकार में ले लिया था, जो उनके प्रारंभिक मराठा साम्राज्य का एक अत्यंत महत्वपूर्ण आधार बन गया। यह किला उनके लिए पुणे के पास सुरक्षा का एक मुख्य केंद्र था।

अन्य किले : शिवाजी महाराज ने कई अन्य किलों पर भी विजय प्राप्त की थी, जैसे–

राजगढ़ किला – छत्रपति शिवाजी महाराज ने 1647 में मात्र 20 वर्ष की आयु में राजगढ़ किले (मुरुमदेव) पर विजय प्राप्त कर इसे अपनी पहली राजधानी बनाया। यह किला उनके पिता शाहजी राजे की जागीर में था और अपनी सामरिक स्थिति के कारण हिंदवी स्वराज्य के उदय का प्रमुख केंद्र बना, जिसे बाद में उन्होंने "प्रचंडगढ़" के रूप में पुनर्गठित किया।

शिवनेरी किला– छत्रपति शिवाजी महाराज का जन्म 19 फरवरी 1630 को जुन्नार के पास स्थित शिवनेरी किले में हुआ था। यद्यपि यह किला उनके बचपन का घर था, लेकिन 1637 के बाद यह मुगलों के अधीन आ गया। शिवाजी ने 1673 और 1678 में इसे जीतने का प्रयास किया, लेकिन मुगल किलेदार अजीजखान के कारण शुरुआती प्रयास विफल रहे। अंततः, 1716 में शाहू

महाराज के समय यह किला मराठा साम्राज्य में शामिल हुआ।

लोहागढ़ किला – छत्रपति शिवाजी महाराज ने 1648 में लोहागढ़ किले (महाराष्ट्र) पर कब्ज़ा कर अपनी रणनीतिक शक्ति को मजबूत किया। 1665 में पुरंदर की संधि के बाद इसे मुगलों को सौंपना पड़ा, लेकिन 1670 में शिवाजी ने इसे पुनः जीत लिया। यह किला उनके खजाने और सूरत से लूटे गए धन का एक सुरक्षित स्थान था, जो मराठा शासन की रक्षात्मक दृढ़ता का प्रतीक बना।

सिंधुदुर्ग किला – सिंधुदुर्ग किला छत्रपति शिवाजी महाराज की दूरदर्शिता का प्रतीक है, जिसका निर्माण 1664–1667 के बीच कोंकण तट की सुरक्षा और जंजीरा के सिद्दीकी व विदेशी ताकतों (पुर्तगाली, अँग्रेज) को रोकने के लिए मालवन के पास कुरटे द्वीप पर किया गया था। यह किला मराठा नौसेना के मुख्यालय के रूप में कार्य करता था और अपनी अभेद्य वास्तुकला के लिए प्रसिद्ध है।

चाकन किला – 1660 में, शिवाजी महाराज के वफादार किल्लेदार फिरंगोजी नरसला ने चाकन के "संग्रामदुर्ग" पर मुगलों की 20,000 की सेना के सामने 56 दिनों तक वीरतापूर्वक रक्षा की। यद्यपि अंततः गोला–बारूद खत्म होने पर फिरंगोजी को आत्मसमर्पण करना पड़ा, लेकिन इस कड़े प्रतिरोध ने मुगलों को हैरान कर दिया।

शिवाजी की सल्तनत विजय

शिवाजी ने अपनी शासनकाल के दौरान मुगल साम्राज्य, गोलकुंडा की सल्तनत और बीजापुर की सल्तनत जैसी कई सल्तनतों को पराजित किया था। उन्होंने यूरोपीय औपनिवेशिक शक्तियों के साथ भी युद्ध किए। शिवाजी ने निम्नलिखित सल्तनतों को पराजित किया :–

बीजापुर की सल्तनत : शिवाजी ने बीजापुर की सल्तनत के खिलाफ कई युद्ध लड़े और उनके किलों पर कब्ज़ा कर लिया, जैसे कि मुरम्बदेव (राजगढ़), तोरणा, कोंढाणा (सिंहगढ़) और पुरंदर।

मुगल साम्राज्य : शिवाजी ने मुगल साम्राज्य के खिलाफ भी युद्ध लड़े और उन्होंने मुगलों के कई इलाकों पर कब्ज़ा कर लिया।

गोलकुंडा की सल्तनत : शिवाजी ने गोलकुंडा की सल्तनत के साथ भी युद्ध किए।

पुर्तगाली : शिवाजी ने पुर्तगालियों से भी युद्ध लड़े और उन्हें पश्चिमी तट तक सीमित कर दिया।

अन्य : उन्होंने विभिन्न स्थानीय शासकों और अन्य क्षेत्रीय शक्तियों के साथ भी संघर्ष किए।

शिवाजी को मुसलमान भूत–प्रेत कहने लग गए थे, शिवाजी आंधी–तूफान की तरह आते थे और उसी गति से शत्रु पर प्रहार करके गायब भी हो जाते थे। कभी कोई उनको छु भी नहीं पाता था। कितना भी कठिन पहरा लगा लो, शिवाजी आते जरूर थे और शिवाजी आ गए, यह जानते ही शत्रु खेमे में भगदड़ मच जाती थी। शिवाजी के इस अद्भुत शौर्य का प्रभाव था कि कवि भूषण ने दो महापुरूषों पर ही अपनी लेखनी चलाई, जो उनके मन में बसते थे– शिवा को सराहौं कि सराहौं छत्रसाल को।

उत्तराखंड में यूसीसी लागू हुए एक साल पूरा जानिए क्या हैं फायदे ?

रवि पाराशर

उत्तराखंड में समान नागरिक संहिता यानी यूसीसी लागू हुए एक साल पूरा हो गया है। पिछले साल 27 जनवरी को राज्य में यूसीसी लागू किया गया था। मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी मानते हैं कि समान नागरिक संहिता लागू होने के बाद उत्तराखंड ऐतिहासिक बदलाव का साक्षी बन रहा है। मंगलवार, 27 जनवरी को संहिता लागू होने के एक साल पूरा होने के अवसर पर राज्य में यूसीसी दिवस मनाया गया। समान नागरिक संहिता के तहत उत्तराखंड में शादियों का रजिस्ट्रेशन अब पहले के मुकाबले ज्यादा सरल और पारदर्शी हो गया है। आर्थिक कारणों से राज्य का कोई भी नागरिक अधिकार से वंचित न हो, इसके लिए 26 जुलाई 2025 तक शादियों के रजिस्ट्रेशन के लिए कोई फीस वसूल नहीं की गई। अब तक करीब चार लाख 75 हजार शादियों का रजिस्ट्रेशन यूसीसी के प्रावधानों के तहत किया जा चुका है। साफ है कि देश में पहली बार यूसीसी लागू कर उत्तराखंड दूसरे राज्यों के लिए उदाहरण बन गया है।

उत्तराखंड सरकार ने समान नागरिक संहिता संशोधन अध्यादेश 2026 लागू कर दिया है। राज्यपाल की मंजूरी के बाद अध्यादेश तत्काल रूप से प्रभावी हो गया है। इसके जरिए यूसीसी एक्ट 2024 के कई प्रावधानों में प्रक्रियात्मक, प्रशासनिक और दंडात्मक सुधार किए गए हैं, ताकि इसे असरदार, पारदर्शी और सुचारू रूप से लागू किया जा सके। यूसीसी अध्यादेश के अनुसार नए नियमों के तहत शादी के वक्त पहचान छिपाना या झूठी जानकारी देना विवाह को रद्द करने का आधार बना दिया गया है। इसके साथ ही शादी और लिव–इन रिलेशनशिप में जबरदस्ती, दबाव, धोखाधड़ी या अवैध कृत्य करने वालों को कड़ी सजा के प्रावधान किए गए हैं। संशोधन में यह भी प्रावधान किया गया है कि लिव–इन रिलेशनशिप खत्म होने पर रजिस्ट्रार टर्मिनेशन सर्टिफिकेट जारी करेगा। इसके अलावा कानून में "विधवा" शब्द की जगह अब "पति/पत्नी" शब्द का इस्तेमाल किया जाएगा। अध्यादेश के तहत रजिस्ट्रार जनरल को शादी, तलाक, लिव–इन रिलेशनशिप और उत्तराधिकार से जुड़े रजिस्ट्रेशन रद्द करने का अधिकार भी दिया गया है। साथ ही अगर सब–रजिस्ट्रार तय समय में कार्रवाई नहीं करता है, तो मामला अपने आप रजिस्ट्रार और रजिस्ट्रार जनरल के पास भेज दिया जाएगा। सजा के प्रावधानों में भी बदलाव कर दिया गया है। अब दंड प्रक्रिया संहिता 1973 और भारतीय दंड संहिता 1860 की जगह भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता 2023 और भारतीय न्याय संहिता 2023 को लागू किया गया है। लगाए गए जुर्माने के खिलाफ अपील का अधिकार भी दिया गया है और जुर्माने की वसूली भू–राजस्व की तरह की जाएगी। यूसीसी लागू होने से पहले राज्य में शादियों का रजिस्ट्रेशन उत्तराखंड अनिवार्य विवाह पंजीकरण अधिनियम 2010 के तहत किया जाता था। इसकी पूरी प्रक्रिया ऑफलाइन थी। लेकिन यूसीसी के तहत अब करीब–करीब 100 प्रतिशत विवाह पंजीकरण ऑनलाइन किए जा रहे हैं। आँकड़ों को देखते हुए कहा जा सकता है कि इसके अच्छे नतीजे देखने को मिल रहे हैं। समान नागरिक संहिता का उल्लेख भारतीय संविधान के भाग चार के अनुच्छेद 44 में किया गया है। यह राज्य के नीति निदेशक तत्वों का हिस्सा है, जिसमें कहा गया है कि है कि राज्य भारत के समस्त राज्यक्षेत्र में नागरिकों के लिए एक समान नागरिक संहिता यानी विवाह, तलाक, उत्तराधिकार और गोद लेने के मामलों में एक जैसे

अधिकार सुनिश्चित करने का प्रयास करेगा। अनुच्छेद 44 में दिए गए सुझाव का मुख्य उद्देश्य निजी कानूनों में एकरूपता लाकर सभी नागरिकों को एक जैसे अधिकार देना है, ताकि धर्म, संप्रदाय या लिंग के आधार पर भेदभाव खत्म हो सके। लेकिन आजादी के बाद उत्तराखंड को छोड़ कर किसी भी राज्य ने इस ओर कोई पहल ही नहीं की। हालांकि गोवा में 1867 के पुर्तगाली कानून के तहत समान नागरिक संहिता पहले से ही लागू है। अब गौर करने वाली बात यह भी है कि देश के कई हाई कोर्टों और सुप्रीम कोर्ट ने भी बहुत बार अपने ऐतिहासिक निर्णयों में देश में समान नागरिक संहिता लागू करने की जरूरत प्रमुख रूप से रेखांकित की है, लेकिन राज्यों ने यूसीसी लागू करने की कोई जरूरत अभी तक क्यों नहीं समझी है, इस बड़े प्रश्न का एक मुख्य उत्तर तो यही है कि वोट बैंक की राजनीति या कहें कि तुष्टीकरण की राजनीति की वजह से पार्टियों या गठबंधनों की सरकारों ने इसे लागू करने के बारे में किसी भी स्तर पर विचार ही नहीं किया।

उत्तराखंड में भी समान नागरिक संहिता लागू किए जाने पर कई कट्टरपंथी संगठनों ने इसका भरपूर विरोध किया, लेकिन महिलाओं, खास

कर मुस्लिम समुदाय की महिलाओं को पुरुषों के बराबर हक मिलने की बात समझ में आने के बाद वे इसका विरोध नहीं कर रही हैं। यूसीसी लागू होने के बाद अब हलाला, इद्दत और तलाक जैसी प्रथाओं पर प्रतिबंध लग गया है। इसने संपत्ति और उत्तराधिकार के मामलों में महिलाओं के लिए समान अधिकार तय किए हैं। शादी और तलाक का पंजीकरण अनिवार्य किया गया है। जो जोड़े विवाह या तलाक का पंजीकरण नहीं कराएंगे, उन्हें सरकारी फायदे नहीं मिलेंगे। लिव–इन रिश्तों का रजिस्ट्रेशन भी जरूरी कर दिया गया है। ऐसे रिश्तों से पैदा हुए बच्चों को भी यूसीसी के तहत वैधता दी गई है। उत्तराखंड सरकार ने विवाह, तलाक, उत्तराधिकार अधिकार और लिव–इन रिलेशनशिप के रजिस्ट्रेशन के लिए ऑनलाइन पोर्टल बनाया है। पोर्टल पर अपनी परेशानी की शिकायत भी की जा सकती है। सीमित इंटरनेट पहुँच वाले दूरदराज या ग्रामीण इलाकों में लोगों की मदद के लिए कॉमन सर्विस सेंटर यानी सीएससी को रजिस्ट्रेशन के लिए अधिकृत किया गया है। सीएससी एजेंट जरूरी रजिस्ट्रेशन के लिए पहाड़ी और दूरदराज के इलाकों में घरों का दौरा कर रहे हैं। ग्रामीण इलाकों में ग्राम पंचायत विकास अधिकारियों को इस प्रक्रिया में मदद के लिए उप–रजिस्ट्रार के तौर पर नामित किया गया है।

murari.shukla@gmail.com

सरस खेड़ी मंडल में हिंदू सम्मेलन

अशोकनगर हनुमानगढ़ सरस खेड़ी मंडल का हिंदू सम्मेलन श्री सिद्धेश्वर धाम जगतरा पहाड़ पर संपन्न हुआ, जिसमें मंचासीन 108 महंत श्यामसुंदर दास जी महाराज, 108 महंत ईश्वर दास जी महाराज की उपस्थिति में मुख्य वक्ता विश्व हिंदू परिषद प्रांत प्रमुख अर्चक मंदिर डॉ. दीपक मिश्रा ने कहा कि आज हिंदू समाज को संगठित करने के लिए राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शताब्दी वर्ष के शुभ अवसर पर 'हिंदू हम सब एक हैं', 'जात–पात की करो विदाई हिंदू हम सब भाई–भाई' के संकल्प के साथ शुरू किया, इसमें राम जन्मभूमि संघर्ष का इतिहास बताया और कहा कि चार लाख राम भक्तों ने बलिदान दिया, 78 युद्ध हुए, हम सब सौभाग्यशाली हैं कि भगवान राम लला के भव्य मंदिर के

दर्शन कर रहे हैं। इस अवसर पर संघ के आह्वान पर जो समाज मे पंच परिवर्तन का आवाहन किया गया, उसके बारे में जानकारी देते हुए कहा कि भारत भूमि देवों की भूमि है, भगवान रामकृष्ण की भूमि है, अगर इसको सुरक्षित करना है, तो समाज में परिवर्तन लाना होगा और समाज परिवर्तन के लिए हमें पंच परिवर्तन का संकल्प करना होगा, तो हमें अपने परिवारों को बचाना होगा, प्रकृति को बचाने के लिए पर्यावरण की रक्षा करना होगी, स्वदेशी को अपनाना होगा, नागरिक कर्तव्यों का पालन करना होगा, समाज में बड़ी विषमता असमानता को दूर कर समरसता स्थापित करना होगा।

अयोध्या श्री राम मंदिर
वैश्विक शांति और समृद्धि की नींव

पंकज जगन्नाथ जयसवाल

22 जनवरी, 2024 को दुनियाँ भर के लाखों लोगों ने राम लला की प्राण प्रतिष्ठा में भाग लिया, जिसने भारत के आध्यात्मिक पुनर्जागरण की शुरुआत की। श्री राम की जन्मभूमि अयोध्या सिर्फ एक शहर से कहीं ज्यादा है, यह एक कालातीत, आध्यात्मिक गूंज है। यह श्री राम के धर्म, सत्य, बलिदान और आदर्श जीवन के प्रतीक का प्रतिनिधित्व करता है। अयोध्या भारतीय सँस्कृति, सनातन धर्म, शाश्वत भक्ति और भारत को 'विश्वगुरु' बनाने के लिए दुनियाँ में शांति लाने के मार्ग के रूप में एक प्रकाश स्तंभ की तरह खड़ा है, जबकि हाल ही में निर्मित राम मंदिर आध्यात्मिक चमक से जगमगा रहा है।

श्री राम मंदिर हिंदू दर्शन और सँस्कृति की भव्यता को दर्शाता है। इसका विस्तृत डिजाइन, जो प्राचीन भारत की कलात्मक और स्थापत्य प्रतिभा का प्रतिनिधित्व करता है, पारंपरिक भारतीय कौशल, ज्ञान और कारीगरी को प्रदर्शित करता है। अपनी शानदार वास्तुकला से परे, यह मंदिर हिंदू और वैश्विक सँस्कृति में एक एकीकृत शक्ति के रूप में कार्य करने के लिए भाषाई और भौगोलिक बाधाओं को पार करता है। यह दुनियाँ भर में हिंदू प्रवासियों के लिए उनकी वंशावली की याद दिलाता है और साँस्कृतिक गौरव का स्रोत है। दिन–ब–दिन अधिक तंत्रज्ञान से जुड़े हुए दुनियाँ में, यह एकता को बढ़ावा देता है और हिंदू धर्म के कालातीत सिद्धांतों को बनाए रखता है। श्री राम की छवि अयोध्या या भारत तक सीमित नहीं है। उनकी आभा वास्तव में पूरी दुनियाँ में महसूस की जाती है। वह पूरी मानवता के प्रतीक हैं।

हिंदू धर्म के संदर्भ में, राम मंदिर का निर्माण लाखों लोगों की धार्मिक और साँस्कृतिक विरासत में एक महत्वपूर्ण मोड़ का प्रतिनिधित्व करता है। एक भौतिक इमारत होने के अलावा, भगवान राम को समर्पित यह मंदिर आध्यात्मिक पुनर्जन्म, साँस्कृतिक संरक्षण और उन सिद्धांतों का प्रतीक है, जो दुनियाँ भर में हिंदुओं और मानवता में विश्वास रखने वालों के दिलों में गहराई से अंकित हैं। राम मंदिर की कहानी हिंदू धर्म के लोकाचार के साथ एक गहरा संबंध बनाती है, जो एक पवित्र स्थान पर ईश्वर की वापसी की सांझा इच्छा का प्रतिनिधित्व करती है। हिंदुओं के लिए, राम मंदिर उनकी प्राचीन विरासत की एक भौतिक याद दिलाता है और सँस्कृति की शाश्वत जीवन शक्ति का प्रतीक है। परिणामतः, यह मंदिर हमारे समाज के मूलभूत सिद्धांतों और राम के उन गुणों दोनों का प्रतिनिधित्व करता है, जिन्हें सभी लोग प्रशंसनीय पाते हैं। इस 7वें या वैवस्वत मन्वंतर में 28वें द्वापर के खत्म होने और कलियुग की शुरुआत की पाँचवीं सहस्राब्दी ईसा पूर्व में भगवान कृष्ण के निजलोकागमन के बाद रामराज्य की प्रतीकात्मक स्थापना से चिंह्नित किया गया था।

'राम' शब्द सिर्फ एक प्राचीन सभ्यता से कहीं अधिक है, जो आज तक

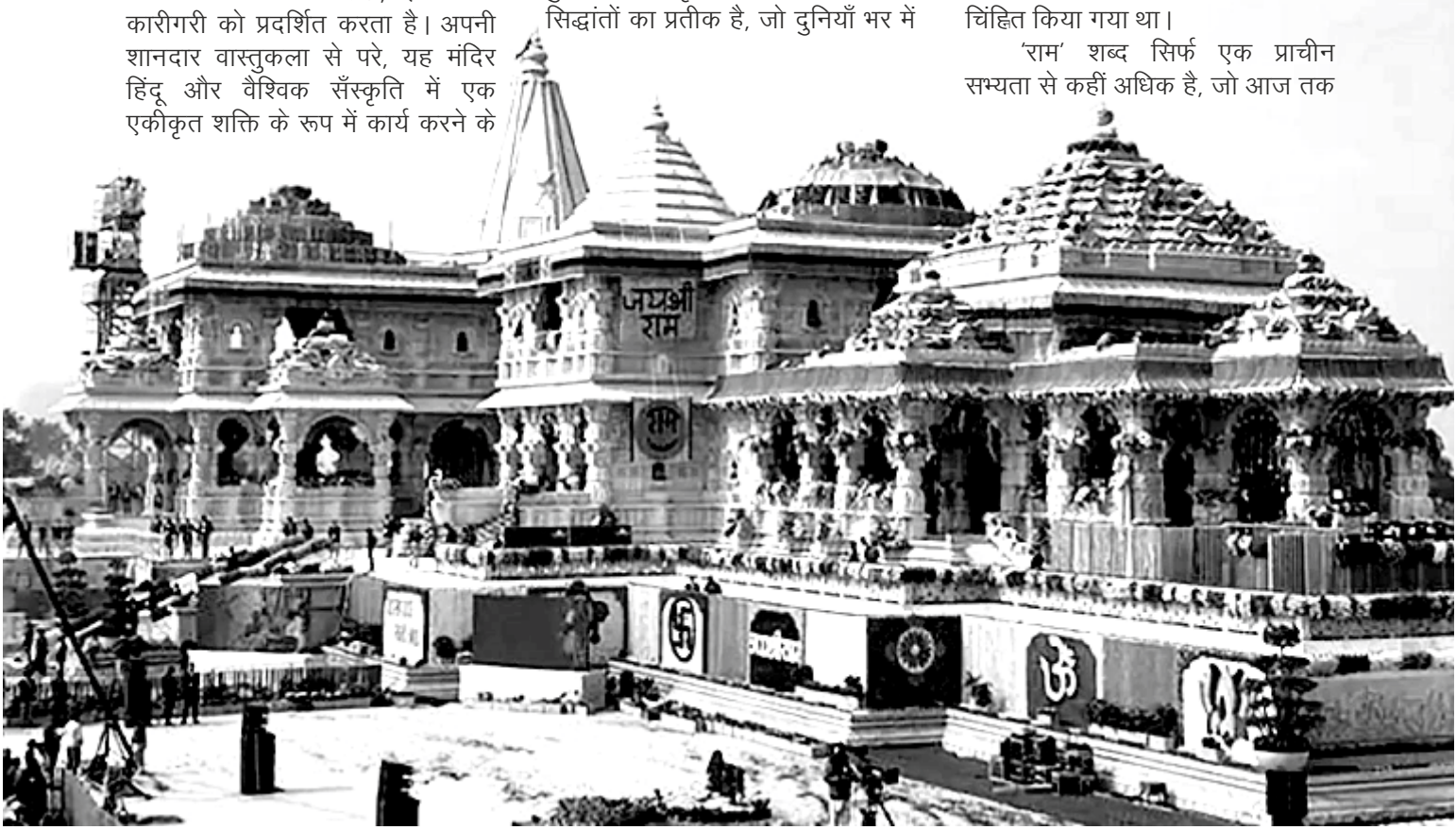

विद्यमान है, यानी भारत। यह नाम एक पहचान और एक मूल्य का प्रतीक है, जो व्यवहार और जीवंतता में सभी ऐतिहासिक युगों से परे है। भारत के उत्तरी और दक्षिणी क्षेत्रों के साथ–साथ देश के पश्चिम और पूर्व की लोककथाएँ लोगों के दिलों में जिंदा हैं। 'राम' एक ऐसा नाम है, जिसकी भारत के हर कोने में बच्चे छोटी उम्र से ही गुणगान करते हैं। उनकी पौराणिक जीवन कहानियाँ भारत की सीमाओं से परे दक्षिण–पूर्व एशियाई देशों तक फैल गई हैं, जहाँ रामायण को आज भी थिएटर, संगीत, नृत्य, चित्रकला और मूर्तिकला में रचनात्मक रूप से दिखाया जाता है।

सँस्कृत में वाल्मीकि रामायण, हिंदी में तुलसीदास की रामचरितमानस, तमिल में कंबन की रामावतारम और श्री राम के महाकाव्य की कई और क्षेत्रीय कहानियाँ हजारों सालों से पूरे भारत में गूंज रही हैं। यह आम कहानी जो भाषाओं और रीति–रिवाजों से परे है, भारत को एकजुट करने वाले कारक के रूप में उनके कार्य को उजागर करती है। भारत से परे, रामायण का पूरे दक्षिण–पूर्व एशिया पर प्रभाव है; म्यांमार और लाओस की कला, थाईलैंड की रामाकियन, कंबोडिया की रीमकर और इंडोनेशिया की काकाविन रामायण सभी यह दर्शाते हैं कि राम के सिद्धांत विश्व साँस्कृतिक परंपराओं में कितने गहरे बसे हुए हैं। राम के सिद्धांत सार्वभौमिक रूप से आकर्षक हैं, जैसा कि अंकोरवाट के शानदार स्मारकों और जावा की छाया कठपुतलियों से देखा जा सकता है।

श्री राम को समर्पित इस शानदार मंदिर को भारत की सॉफ्ट पावर के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व के रूप में देखा जा सकता है। राम मंदिर का महत्व स्थानीय सीमाओं से परे वैश्विक क्षेत्र तक फैला हुआ है। यह मंदिर प्रेम, विश्वास, अंतर्राष्ट्रीय भाईचारे और मानवता के सभी सकारात्मक पहलुओं का प्रतीक बन जाएगा, जो दुनियाँ भर के लोगों के साथ गूंजते हैं, क्योंकि राष्ट्र अपनी साँस्कृतिक और ऐतिहासिक कहानियों को फिर से परिभाषित करते हैं। भारतीय सँस्कृति की मूलभूत समावेशिता निःसंदेह एक अधिक सहायक माहौल प्रदान करेगी।

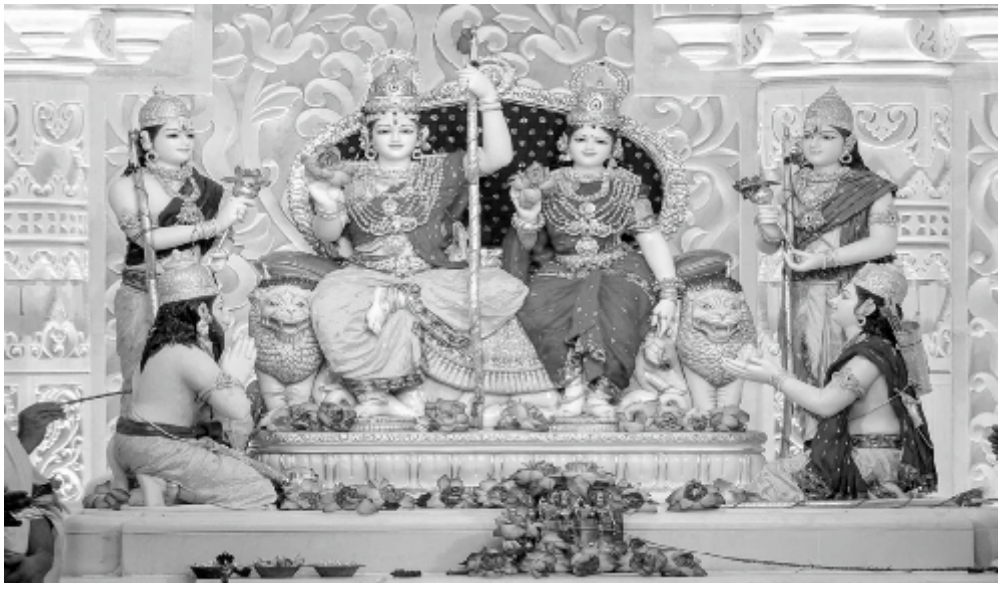

श्री राम को समर्पित इस शानदार मंदिर को भारत की सॉफ्ट पावर के राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व के रूप में देखा जा सकता है। राम मंदिर का महत्व स्थानीय सीमाओं से परे वैश्विक क्षेत्र तक फैला हुआ है। यह मंदिर प्रेम, विश्वास, अंतर्राष्ट्रीय भाईचारे और मानवता के सभी सकारात्मक पहलुओं का प्रतीक बन जाएगा, जो दुनियाँ भर के लोगों के साथ गूंजते हैं, क्योंकि राष्ट्र अपनी साँस्कृतिक और ऐतिहासिक कहानियों को फिर से परिभाषित करते हैं। भारतीय सँस्कृति की मूलभूत समावेशिता निःसंदेह एक अधिक सहायक माहौल प्रदान करेगी।

इतिहास की उथल–पुथल के बावजूद, अयोध्या की भावना बनी रही, राष्ट्रीय सीमाओं को पार करते हुए और दुनियाँ भर में गूंजती रही। भारत से परे, भगवान राम को नेपाल, श्रीलंका, थाईलैंड, इंडोनेशिया और अन्य देशों में पूजा जाता है।

हजारों सालों से भारत की सँस्कृति, रीति–रिवाज और सामाजिक आदर्श पूरे दक्षिण एशियाई उपमहाद्वीप के साथ सांझा किए गए हैं। ये विशेषताएँ साथ ही क्षेत्रीय राजनीतिक गतिशीलता, राम मंदिर द्वारा फिर से परिभाषित की जा सकती हैं। भारतीय सभ्यता के मौलिक गुण, समावेशिता और स्वीकृति ने ऐतिहासिक रूप से दुनियाँ भर के विभिन्न देशों, धर्मों, सँस्कृतियों और परंपराओं के बीच राजनीतिक खाई को पाटने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे भारत एक पूरी तरह से अलग राष्ट्र बन गया है, जहाँ धार्मिक बहुलवाद की गारंटी है और उसे प्रोत्साहित किया जाता है।

अयोध्या में श्री राम मंदिर सदियों के लचीलेपन और भारतीय सँस्कृति का उत्सव मनाता है, न कि सिर्फ विनाश की याद दिलाता है। रामलला के दर्शन का उद्देश्य हमारे समाज के मौलिक सिद्धांतों और मूल्यों को बनाए रखना, उनके महत्व पर जोर देना और आने वाली पीढ़ियों के लिए इन सिद्धांतों की एक स्थायी याद दिलाना है। अयोध्या राम मंदिर में राम लला की मूर्ति का "प्राण प्रतिष्ठा" समारोह सिर्फ एक धार्मिक अनुष्ठान से कहीं ज्यादा था। इसमें बहुत कुछ और भी था। यह सभ्यता के वैश्विक जागरण और एक ऐसे राष्ट्र के उदय का साक्षी है, जो आखिरकार उपनिवेशवाद के बंधनों से मुक्त हो गया है।

'यह एक शानदार वि–उपनिवेशीकरण का प्रयास है। हालांकि, जो भी वि–उपनिवेशीकरण की बात करता है, वह काफी गुस्से में है।' एक यूट्यूब वीडियो में, कनाडाई पत्रकार डैनियल बोर्डमैन ने 'प्राण प्रतिष्ठा' कार्यक्रम के

लिए भारत की प्रशंसा करते हुए कहा, 'यह हिंदू सभ्यता का एक गौरवपूर्ण पुनरुद्धार है।' कॉर्पोरेट विशेषज्ञ लार्स आरकेटी नोरेंग ने एक्स पर लिखा, 'राम मंदिर एक चमकदार याद दिलाता है कि भारत न केवल हमलों से बच गया बल्कि अब फल–फूल रहा है।' प्राण प्रतिष्ठा की सटीक परिभाषा 'जीवन शक्ति की स्थापना' है, जो राम लला की मूर्ति को जीवन देती है और उसे एक साधारण आकार से एक ऐसे देवता में बदल देती है, जो आशीर्वाद दे सकता है और प्रार्थनाएँ स्वीकार कर सकता है।

ऐसे समय में जब विघटनकारी आधुनिकता और प्राचीन धर्म की गूंज टकराती है, श्री राम का अटूट लोकाचार एक दर्पण, एक स्पंज और कई अक्सर विपरीत व्याख्याओं और आकांक्षाओं का प्रतिबिंब है, जो आधुनिक भारतीय समाज और दुनियाँ को आकार देते हैं और आगे बढ़ाते हैं। भगवान श्री राम आदर्श "मर्यादा पुरुषोत्तम" हैं, जो आध्यात्मिक गहराई और मार्शल वीरता का एक सामंजस्यपूर्ण संयोजन हैं, जो भारतीय लोकाचार की जीवंत ऊर्जा में ऊंचे खड़े हैं और भारतीय समाज, साहित्य, संगीत और गीतों में कल्पना किए गए आदर्श पुरुष का प्रतिनिधित्व करते हैं।

राम मंदिर के निर्माण से भारत में समावेश के एक नए युग की शुरुआत हुई है। जीवन के सभी क्षेत्रों के लोगों को इस जगह पर इकट्ठा होने और भारत की साँस्कृतिक विविधता का जश्न मनाने के लिए आमंत्रित किया जाता है, जिसे सांझा विरासत के प्रतीक में बदल दिया गया है। राम मंदिर का प्राण प्रतिष्ठा समारोह उन सामान्य आदर्शों की एक मार्मिक याद दिलाता है, जो भारत के लोगों को एक साथ बांधते हैं। मंदिर की भव्यता श्री राम के प्रति एक मजबूत प्रतिबद्धता के साथ–साथ पिछली कड़वाहट को पीछे छोड़कर एक समृद्ध भविष्य को अपनाने के सांझा संकल्प को दर्शाती है।

अगर श्री राम को एक बेंचमार्क माना जाता है, तो इसलिए नहीं कि वह सिर्फ एक दिव्य शक्ति हैं, बल्कि इसलिए कि उन्होंने मानवीय क्षमता और दृढ़ता की उस हद को दिखाया, जो चमत्कार और अजूबे पैदा कर सकती है। जन्म से इंसान होने के बावजूद, उन्हें बचपन से ही शांति और सुकून के कारण दिव्य शक्ति के रूप में पूजा जाता है। अपनी मजबूत हिंदू जड़ों के बावजूद, श्री राम मंदिर की कहानी में एक सार्वभौमिक सबक है। भगवान राम का जीवन निष्पक्षता, कर्तव्य और सद्भाव का एक उदाहरण है–ऐसे मूल्य जो सभी सँस्कृतियों और धर्मों से परे हैं। नतीजतन, यह मंदिर हिंदुओं के लिए एक पवित्र स्थान होने के साथ–साथ उन आदर्शों का प्रतीक भी है, जो दुनियाँ भर के सभी लोगों को ऊपर उठाते हैं।

यह विभिन्न पृष्ठभूमि के लोगों को धर्म के सिद्धांतों पर विचार करने और न्याय, करुणा और ईमानदारी से भरे जीवन के लिए प्रयास करने के लिए प्रोत्साहित करता है। एक 'स्व' मानसिकता, जिसमें 'राष्ट्र और भारतीय सँस्कृति पहले' का रवैया शामिल है, ने उपनिवेशवाद की जगह हर भारतीय की प्रमुख मानसिकता बन गयी है। यह हमारे राष्ट्र और समाज को जीवन के हर पहलू में विकास के लिए तैयार करेगा। श्री राम सिर्फ एक नाम और एक आकृति से कहीं ज्यादा हैं। वह प्रेरणा का एक कालातीत स्रोत हैं, जिसने इस पवित्र सभ्यता को पोषित किया है और इसमें समाया हुआ है। हाल के दशकों में हमारे राष्ट्र को अभूतपूर्व पैमाने पर अपनी प्राचीन जड़ों को स्वीकार करते हुए देखना उत्साहजनक है। जैसे–जैसे भारत आगे बढ़ रहा है, आधुनिकता और परंपरा के बीच संतुलन बनाते हुए, आइए हम घोषणा करें कि जहाँ जड़ें गहरी होती हैं, वहाँ जीत निश्चित होती है।

pankajjayswal1977@gmail.com

संस्कार शाला और सेवा केंद्र ही विहिप की पहचान है : आनंद हरबोला

25 जनवरी 2026 को भोपाल विहिप प्रान्त मध्यभारत के सेवा विभाग द्वारा सेवा कुंभ 2026 का आयोजन सुन्दरवन गार्डन लालाघाटी में किया गया। इस कार्यक्रम को मार्गदर्शन प्रदान करते हुए विहिप केंद्रीय सह मंत्री श्री आनंद जी हरबोला ने कहा कि विहिप सेवा के कार्य के माध्यम से प्रत्येक अभावग्रस्त हिंदू तक पहुँचना चाहता है और तब तक सेवा कार्य करता रहेगा, जब तक कोई भी हिंदू अभावग्रस्त न रह जाए, कार्यक्रम के प्रारम्भ में दीप प्रज्वलन, तीन बार ओम का उच्चारण किया गया।

मंचासीन पदाधिकारी पूज्या साध्वी रंजना दीदी, मुख्य वक्ता श्री आनंद जी हरबोला केंद्रीय सह मंत्री एवं अखिल भारतीय सह सेवा प्रमुख, श्री अजेय कुमार पारीक केंद्रीय मंत्री एवं अखिल भारतीय सेवा प्रमुख, मुख्य अतिथि डॉक्टर अश्वनी टंडन जी राष्ट्रीय महासचिव नेशनल मेडिकोज ऑर्गेनाइजेशन, श्री अरुण नेटके केंद्रीय सह मंत्री, श्री जितेंद्र पवार क्षेत्र संगठन मंत्री, श्री विभूतिभूषण पांडे क्षेत्र सेवा प्रमुख, श्री नवल सिंह भदोरिया प्रान्त मंत्री, श्री गोपाल दास राठी प्रान्त सेवा प्रमुख, मंच संचालन राजेश साहू, आभार श्रीमती शम्मी हरीश दीदी ने किया। प्रांत सह सेवा प्रमुख साथ में श्री सुरेंद्र सिंह प्रान्त संगठन मंत्री, श्री जितेंद्र चौहान प्रान्त सह मंत्री, श्री पप्पू पालीवाल प्रान्त टोली सदस्य सेवा, श्री जीवन शर्मा विभाग मंत्री, श्री हरी ओम शर्मा, विभाग सह मंत्री, अतिथि परिचय एवं स्वागत एवं सामूहिक प्रकट कार्यक्रम में सूर्य नमस्कार, व्यायाम योग, दोहा, चौपाई, भजन वीर हनुमाना, नाटक पर्यावरण, भाषण अँग्रेजी में हिन्दू संस्कृति का विषय, संस्कार शाला, गीत–लोकगीत की प्रस्तुति भोपाल की 55 संस्कार शाला के बच्चे एवं आचार्या दीदी ने दी, प्रस्तावना प्रान्त सेवा प्रमुख ने दी, संत आशीर्वचन सुभाषित यदा यदा ही धर्मस्य, मुख्य वक्ता प्रबोधन रहा। आभार के बाद सामूहिक वंदे मातरम गीत गा कर समापन हुआ।

vhpmadhybharat@gmail.com

भारतीय परम्पराओं का अनुपालन कर हमें संयुक्त परिवारों को बचाना होगा

प्रहलाद सबनानी

भारत की आर्थिक प्रगति को रोकने, कम करने अथवा प्रभावित करने के उद्देश्य से वस्तुतः, चार शक्तियों ने हाथ मिला लिए हैं। ये चार शक्तियाँ हैं, कट्टरवादी इस्लाम, प्रसारवादी चर्च, साँस्कृतिक मार्क्सवाद एवं वैश्विक बाजार शक्तियाँ। हालांकि उक्त चारों शक्तियों की अन्य देशों में आपसी लड़ाई है, परंतु भारत के मामले में ये एक हो गई हैं और भारत में यह आपस में मिलकर भारत के हितों के विरुद्ध कार्य करती हुई दिखाई दे रही हैं।

इसी संदर्भ में आज वैश्विक स्तर पर भारत के विरुद्ध कई झूठे विमर्श भी गढ़े जा रहे हैं। हाल ही के समय में इस प्रक्रिया ने कुछ रफ्तार पकड़ी है। विमर्श के माध्यम से जनता के मानस को प्रभावित करने का प्रयास किया जाता है। विमर्श सत्य, अर्द्धसत्य अथवा झूठ भी हो सकता है। भारत के बारे में पूरे विश्व में धारणा है कि यहाँ आध्यात्मिकता की पराकाष्ठा रही है। परंतु, अब पूरे विश्व में विशेष रूप से भारत के संदर्भ में पुराने विमर्श टूट रहे हैं और नित नए विमर्श गढ़े जा रहे हैं। भारत चूंकि, हाल ही के समय में वैश्विक स्तर पर एक मजबूत आर्थिक ताकत बन कर उभर रहा है, भारत की यह प्रगति कुछ देशों को रास नहीं आ रही है एवं यह सभी मिलकर भारत के सम्बंध में झूठे विमर्श गढ़ रहे हैं।

पश्चिमी विचारधारा में उत्पादों के अधिकतम उपभोग को जगह दी गई है। आज को अच्छी तरह से जी लें, कल किसने देखा है, यह पश्चिमी सोच, चर्च की प्रेरणा एवं भौतिकवाद पर आधारित है। इस्लाम एवं ईसाईयत में पुनर्जन्म पर विश्वास नहीं किया जाता है। जो कुछ भी करना है, वह इसी जन्म में करना है। इसके ठीक विपरीत भारतीय सनातन सँस्कृति पुनर्जन्म में विश्वास करती है, इससे भारतीय नागरिकों द्वारा उपभोग में संयम बरता जाता है एवं उत्पादन में बहुलता होने की विचारधारा पर कार्य करते हुए दिखाई देते हैं। ईश्वर से प्रार्थना की जाती है कि "प्रभु इतना दीजिए कि मैं भी भूखा ना रहूँ और अन्य कोई भी भूखा ना सोय", यह भारतीय विचारधारा है।

भारतीय सनातन सँस्कृति की विचारधारा के ठीक विपरीत आज वैश्विक बाजार शक्तियाँ भारत में भी उपभोक्तावाद को फैलाने का प्रयास कर रही हैं। विशेष रूप से दीपावली एवं रक्षाबंधन जैसे शुभ त्योहारों के अवसर पर "कुछ मीठा हो जाए" जैसे विज्ञापन देकर यह विमर्श खड़ा करने का प्रयास किया जाता है कि भारतीय मिठाईयों एवं व्यंजनों जैसे जलेबी, इमरती तथा दूध एवं खोए से बनी मिठाईयाँ खाने से मधुमेह का रोग हो जाता है, अतः सदियों से भारत में उपयोग हो रहे इन स्वादिष्ट व्यंजनों के स्थान पर केडबरी चाकलेट अधिक स्वास्थ्यवर्धक है, जिसका अधिक उपयोग करना चाहिए। इस प्रकार, भारी भरकम राशि खर्च कर, विदेशी बहुराष्ट्रीय कम्पनियों द्वारा निर्मित मीठे पदार्थों को, विभिन्न विज्ञापनों के माध्यम से भारतीय समाज के मानस पर उतारने का प्रयास किया जाता है। साथ ही, विभिन्न भारतीय त्योहारों के समय वैश्विक बाजार शक्तियों द्वारा यह भी कह कर कि "दीपावली के शुभ अवसर पर जलाए जाने वाले पटाखे पर्यावरण की हानि करते हैं", "होली पर्व पर भारी मात्रा में पानी की बर्बादी की जाती है" "महाशिवरात्रि पर्व पर दूध की बर्बादी की जाती है", "माई बॉडी माई चॉईस", "हमको भारत में रहने में डर लगता है", आदि विमर्श स्थापित करने का प्रयास किया जाता है। कुल मिलाकर पश्चिमी

"भारतीय सनातन संस्कारों के अनुसार भारत में कुटुंब को एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में स्वीकार किया गया है एवं भारत में संयुक्त परिवार इसकी परिणती के रूप में दिखाई देते है। परंतु, पश्चिमी आर्थिक दर्शन में संयुक्त परिवार लगभग नहीं के बराबर ही दिखाई देते हैं एवं विकसित देशों में सामान्यत: बच्चों के 18 वर्ष की आयु प्राप्त करते ही, वे अपना अलग परिवार बसा लेते हैं तथा अपने माता पिता से अलग मकान लेकर रहने लगते हैं।"

देशों द्वारा आज भारतीय सनातन सँस्कृति पर आधारित हिन्दू परम्पराओं पर लगातार प्रहार किए जा रहे हैं।

भारतीय सनातन सँस्कारों के अनुसार भारत में कुटुंब को एक महत्वपूर्ण इकाई के रूप में स्वीकार किया गया है एवं भारत में संयुक्त परिवार इसकी परिणती के रूप में दिखाई देते है। परंतु, पश्चिमी आर्थिक दर्शन में संयुक्त परिवार लगभग नहीं के बराबर ही दिखाई देते हैं एवं विकसित देशों में सामान्यतः बच्चों के 18 वर्ष की आयु प्राप्त करते ही, वे अपना अलग परिवार बसा लेते हैं तथा अपने माता पिता से अलग मकान लेकर रहने लगते हैं। इस चलन के पीछे संभवत आर्थिक पक्ष इस प्रकार जुड़ा हुआ है कि जितने अधिक परिवार होंगे, उतने ही अधिक मकानों की आवश्यकता होगी, कारों की आवश्यकता होगी, टीवी की आवश्यकता होगी, फ्रिज की आवश्यकता होगी, आदि। लगभग समस्त उत्पादों की आवश्यकता इससे बढ़ेगी, जो अंततः मांग में वृद्धि के रूप में दिखाई देगी एवं इससे इन वस्तुओं का उत्पादन बढ़ेगा। ज्यादा वस्तुएँ बिकने से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों की लाभप्रदता में भी वृद्धि होगी। कुल मिलाकर इससे आर्थिक वृद्धि दर तेज होगी। विकसित देशों में इस प्रकार की मान्यताएँ समाज में अब सामान्य हो चलीं हैं। अब बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ भारत में भी प्रयासरत हैं कि किस प्रकार भारत में संयुक्त परिवार की प्रणाली को तोड़ा जाए, ताकि परिवारों की सँख्या बढ़े एवं विभिन्न उत्पादों की मांग बढ़े और इन कम्पनियों द्वारा निर्मित उत्पादों की बिक्री बाजार में बढ़े। इसके लिए बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ इस प्रकार के विभिन्न सामाजिक सीरियलों को बनवाकर प्रायोजित करते हुए टीवी पर प्रसारित करवाती हैं, जिनमें संयुक्त परिवार के नुकसान बताए जाते हैं एवं छोटे–छोटे परिवारों के फायदे दिखाए जाते हैं। सास–बहू के बीच, ननद–देवरानी के बीच, दो बहिनों के बीच, पड़ोसियों के बीच, छोटी–छोटी बातों को लेकर झगड़े दिखाए जाते हैं एवं जिनका अंत परिवार की टूट के रूप में बताया जाता है, ताकि भारत में भी पूंजीवाद की तर्ज पर व्यक्तिवाद को बढ़ावा मिल सके। भारत एक विशाल देश है एवं विश्व में सबसे बड़ा बाजार है, बहुराष्ट्रीय कम्पनियाँ यदि अपने इस कुचक्र में सफल हो जाती हैं, तो उनकी सोच के अनुसार भारत में उत्पादों की मांग में बेतहाशा वृद्धि हो सकती है, इससे विशेष रूप से बहुराष्ट्रीय कम्पनियों को सीधे –सीधे फायदा होगा। इसी कारण के चलते आज जॉर्ज सोरोस जैसे कई विदेशी नागरिक अन्य कई विदेशी संस्थानों एवं बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के साथ मिलकर भारतीय सँस्कृति पर हमला करते हुए दिखाई दे रहे हैं एवं भारतीय सँस्कृति को नष्ट करने का प्रयास कर रहे हैं।

पश्चिमी देशों के नागरिकों के लक्ष्य भौतिक (जड़) हो रहे हैं और चेतना कहीं पीछे छूट रही है। केवल आर्थिक विकास अर्थात अर्थ का अर्जन करना ही जैसे इस जीवन का मुख्य उद्देश्य हो। परंतु, भारत के नागरिक सनातन सँस्कृति का अनुसरण करते हुए समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी के अहसास के प्रति भी सजग दिखाई देते हैं, अर्थात उनमें चेतना के दर्शन भी होते हैं।

अब हम समस्त भारतीय नागरिकों को वैश्विक बाजार शक्तियों द्वारा फैलाए जा रहे उक्त वर्णित जाल में नहीं फंसते हुए, हमारे अपने भारतीय व्यंजनों का भरपूर आनंद उठाते हुए अपनी भारतीय परम्पराओं का अनुपालन सुनिश्चित करना चाहिए। हमें अपने जीवन के लगभग प्रत्येक क्षेत्र में केवल स्वदेशी उत्पादों का ही उपयोग करना चाहिए, चाहे वह तुलनात्मक रूप से थोड़ा महंगा ही क्यों न हो। उदाहरण के तौर पर हमारे जीवन में रोजाना उपयोग होने वाले कुछ उत्पादों के नाम यहाँ पर दिए जा सकते हैं, जिनका उत्पादन सदियों से भारत में ही पर्याप्त मात्रा में होता चला आया है। केवल और केवल भारतीय कम्पनियों द्वारा निर्मित इन उत्पादों का उपयोग एवं विदेशी कम्पनियों द्वारा निर्मित इन उत्पादों का उपयोग नहीं करने की शपथ ली जानी चाहिए। जैसे, नहाने का साबुन, कपड़े धोने का साबुन, सौंदर्य प्रसाधन औषधियाँ, टुथपेस्ट दंतमंजन टुथब्रश, दाढ़ी का साबुन ब्लेड्स रेजर, बिस्किट चाकलेट, दुग्ध उत्पाद, ब्रेड, चाय, काफी, शीतपेय, शरबत चटनी, अंचार, मुरब्बा, आइसक्रीम, खाद्यतेल, खाद्य पदार्थ, विद्युत उपकरण, गृहोपयोगी वस्तु, घड़ियाँ, लेखन सामग्री, जूते–चप्पल पॉलिश, तैयार कपड़े, कम्प्यूटर, लैपटॉप एवं उपकरण, टेलिकॉम उपकरण, बाम और मरहम, दो पहिया वाहन, चार पहिया वाहन, स्वचालित वाहन एवं मोबाइल फोन आदि। जब भी बाजार जाएंगे, सामान स्वदेशी ही लाएंगे, जैसे तथ्यों को आत्मसात करना चाहिए। इससे न केवल चीन बल्कि अमेरिका को भी संदेश जाएगा कि भारत अब कई क्षेत्रों में आत्मनिर्भर हो चुका है तथा वैश्विक स्तर पर भारत अब इनके दबाव में आने वाला नहीं है।

prahlad.sabnani@gmail.com

हिन्दुओं को विभाजित करके अपनी राजनीति साधने के प्रयास में विपक्ष

मृत्युंजय दीक्षित

इन दिनों विपक्ष उत्तर प्रदेश में दो घटनाओं के माध्यम से अपनी राजनीति साधने के प्रयास में है। पहली घटना वाराणसी के मर्णिकर्णिका घाट के नवीनीकरण के लिए पुरानी प्रतिमाओं तथा कुछ छोटे मंदिरों पर बुलडोजर चलाने की थी, जो बाद में फर्जी निकली। इस पर मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के उपरान्त एआई वीडियो के आधार पर मंदिर तोड़े जाने की अफवाहें फैलाकर राजनीतिक रोटियाँ सेंकने वाले लोगों, जिनमें आम आदमी पार्टी के सांसद संजय सिंह तथा बिहार के सांसद पप्पू यादव शामिल हैं, पर मुकदमा दर्ज किया गया है। इसके बाद भी इस विषय पर स्थानीय स्तर पर राजनीति की जा रही है। समाजवादी पार्टी पीडीए के नाम पर पाल समाज को भड़काकर धरना–प्रदर्शन इत्यादि का आयोजन कर रही है। इस मुद्दे पर सपा, काँग्रेस व आम आदमी पार्टी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ तथा भारतीय जनता पार्टी की छवि को आघात पहुँचाने के लिए सोशल मीडिया का जमकर दुरूपयोग कर रही है।

दूसरी घटना प्रयागराज में चल रहे माघ मेले की है, जो विवादों में रहने वाले एक शंकराचार्य के तथाकथित अपमान से जुड़ी है। प्रयागराज में प्रतिवर्ष आयोजित होने वाला माघ मेला सफलतापूर्वक चल रहा था, उसमें शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद मेला प्रशासन के नियमों को धता बताते हुए पालकी (बग्घी) में बैठकर अपने भक्तों के साथ संगम नोज पर पहुँचने के लिए अड़ गए। पुलिस बल ने उनको बग्घी न ले जाने का निवेदन किया। उनके भक्तों और पुलिस के बीच विवाद हुआ और उन्होंने पुलिस के साथ हाथापाई शुरू कर दी। इसके बाद जमकर उपद्रव हो गया। अंततः शंकराचार्य अविमुक्तेश्वरानंद धरने पर बैठे और समाजवादी पार्टी और अन्य विरोधी दलों ने मामले को तुरंत ही अपनी राजनीति चमकाने के लिए लपक लिया। विभिन्न राजनीतिक दल इस मुद्दे को जिस तरह उठा रहे हैं, उससे यह स्पष्ट है कि उनको शंकराचार्य या सनातन के सम्मान से कोई लेना देना नहीं है, उनका एकमात्र उद्देश्य इस मुद्दे पर हिन्दू मतों का विभाजन करना है। यह भी संभव है कि इस प्रकरण की पटकथा किसी राजनीतिक दल ने ही लिखी हो, जो आजकल अविमुक्तेश्वरानंद के निकट दिखाई दे रहा है।

राजनीतिक दल तो समय के अनुसार अपने रंग बदलते रहते हैं, किन्तु क्या अविमुक्तेश्वरानंद भी यह भूल गए कि जो समाजवादी आज उनका समर्थन कर रहे हैं, उन्होंने ही कभी उनके ऊपर लाठियाँ बरसाई थीं और जमीन पर पटक–पटक कर मारा था। उस समय भाजपा ने ही उनकी सुरक्षा व बचाव किया था। आज अविमुक्तेश्वरानंद भाजपा व मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के खिलाफ अपमानजनक शब्दों का प्रयोग कर रहे हैं।

अविमुक्तेश्वरानंद प्रायः अपनी विवादित बयानबाजी के कारण चर्चा में रहते हैं। अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर विवादित बयान देकर इन्होंने बड़ा विवाद खड़ा करने का असफल प्रयास किया था। एक बार स्वामी अविमुक्तेश्वरानंद ने कहा था कि राहुल गाँधी हिंदू नही हैं, उन्हें राम मंदिर नहीं जाने देना चाहिए। जब ऑपरेशन सिंदूर के बाद भारत सरकार ने पाक के साथ सिंधु जल समझौता निलंबित किया, तब उन्होंने कहा था कि यह काम करने के लिए भारत को कम से कम 20 साल लग जाएंगे, इन्होंने वक्फ संशोधन बिल को सौगात–ए–मोदी कहा था। यह काशी कारिडोर का भी विरोध कर चुके हैं। यह शंकराचार्य अभी तक अयोध्या दर्शन करने नहीं गए हैं। यह हिंदू समाज को विभाजित करने वाली राजनीतिक ताकतों के हाथों की कठपुतली बनकर उनके शिकार हो गए हैं।

जिन लोगों के मुँह में तमिलनाडु के द्रमुक नेता सनातन की डेंगू, मलेरिया से

तुलना उसके उन्मूलन जैसी बातों पर ताला लग जाता है, वो भी शंकराचार्य के समर्थन में झंडा उठाए हुए हैं। आज वो लोग अविमुक्तेश्वरानंद के पक्ष में खड़े हैं, जिन्होंने कुछ दिन पूर्व मद्रास हाईकोर्ट के जज के खिलाफ महाभियोग चलाने के प्रस्ताव का समर्थन कर दिया था, क्योंकि उस जज ने हिन्दू पक्ष को दीपक जलाने की अनुमति दे दी थी। आज वो हिन्दू सनातन की दुहाई दे रहे हैं, जिन्हें गाय के गोबर से बदबू आती है। बाँग्लादेश में निर्दोष हिन्दुओं की हत्याओं पर पूरा इंडी गठबंधन मौन हो गया। सनातन को अपमानित करने में समाजवदियों ने कोई कोर कसर नहीं छोड़ रखी है। यह समाजवादी रामचिरत मानस व गीता को अपमानित करते हैं, ,इनके विधायक व कार्यकर्ता पवित्र ग्रंथ रामचरित मानस को फाड़ते और जलाते हैं। आज यही लोग शंकराचार्य की आड़ लेकर हिंदू समाज को बांटने की साजिश कर रहे हैं।

प्रयागराज में आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने "बंटोगे तो कटोगे" का नारा दिया था, जिससे समाजवादी व काँग्रेसी काफी परेशान थे कि अगर कहीं हिन्दू पूरी तरह से एकजुट हो गए, तो उनकी राजनीति समाप्त हो जाएगी, इसलिए प्रयागराज की धरती पर ही हिन्दू समाज को बांटने की रणनति बनाई गई और पीडीए की राजनीति करने वाले लोगों ने माघ मेला के पवित्र अवसर को चुना। आम जनमानस की स्मृति बहुत कमजोर होती है और उसे धार्मिक आधार पर विभाजित किया जा सकता है। इन सभी दलों को यह भी पता है कि जब तक ब्राह्मण समाज व समस्त सवर्ण समाज को विभाजित और भाजपा के प्रति उनके मन में निराशा के भाव नही पनपाए जा सकते हैं, तब तक भारतीय जनता पार्टी का विजय रथ उत्तर प्रदेश में रोकना असंभव है।

समाजवादी पार्टी को पता है कि जब तक हिन्दू धर्म को किसी बड़े विवाद के माध्यम से विभाजित नहीं किया जाएगा, तब तक उनका पीडीए शक्तिहीन रहेगा। यही कारण हैं कि जब टी वी चैनलों पर रोहिंग्या और बाँग्लादेशी घुसपैठियों पर चर्चा हो रही थी, तब शंकराचार्य की आड़ में हिन्दू धर्म में दरार डालने वाली बहस हो रही है। विपक्षी दलों के प्रवक्ता मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की तुलना बाबर और औरंगजेब जैसे मुगल शासकों से कर रहे हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने जितना सम्मान संतों और शंकराचार्यों का किया है, उतना किसी ने नहीं किया है। मुख्यंमंत्री ने सनातन धर्म का मान बढ़ाया है। अयोध्या, प्रयाग, काशी, मथुरा, विंन्ध्याचल के उपेक्षित मंदिरों का जीर्णोद्धार करके हिन्दू धर्म का मान बढ़ाया है। ऐसे कर्मयोगी संत के खिलाफ अशोभनीय टिप्पणी अस्वीकार्य है।

ymritvsk1973@gmail.com

भादोन मंडल-अशोकनगर के हिंदू सम्मेलन में समरसता का संकल्प

अशोकनगर भादोन मंडल संघ शताब्दी वर्ष के अवसर पर विशाल हिंदू सम्मेलन संपन्न हुआ, जिसमें मुख्य वक्ता विश्व हिंदू परिषद प्रांत अर्चक मंदिर संपर्क प्रमुख डॉ दीपक मिश्रा ने कहा कि आज हमारे देश में, समाज में जिस प्रकार से राष्ट्र विरोधी तत्व आजादी के पूर्व देश के विभाजन का जो षड्यंत्र रच रहे थे, आज इस षड्यंत्र को दोहराने का प्रयास किया जा रहा है। जातियों के नाम पर, ऊँच–नीच के नाम पर हमारे समाज को, हमारे गाँव को बांटा जा रहा है, इसलिए आज समाज को सचेत होने की आवश्यकता है। हम सब भगवान राम कृष्ण के वंशज हैं। हमारे वेद में कर्म के आधार पर व्यवस्थाएँ थी, जाति के आधार पर व्यवस्था नहीं थी, परंतु मुगल अँग्रेज आए, उन्होंने हमको जातियों में बांट दिया, यह खाई बढ़ती जा रही है, इसको रोकना पड़ेगा। यदि हमारे गाँव को बचाना है, तो आज बड़ा चिंता का विषय है कि हमारे देश के 100 से अधिक जिले ऐसे हो गए हैं, जहाँ भारत माता की जय बोलने वालों की सँख्या घट गई है। वह रामनवमी का जुलूस नहीं निकाल पाते, हिंदू सम्मेलन नहीं कर सकते नहीं तो पत्थर बरसा दिए जाते हैं, इसलिए हमें अपने मंडल को बचाना है, अपने गाँव–गाँव में समरसता लाना होगा।

आज हमारे कुटुंब परिवार में छोटी–छोटी बातों में मनमुटाव हो रहे हैं और हमारा कुटुम्ब खत्म हो रहा है इसलिए हमें परिवार और कुटुंब प्रथा को स्थापित करना होगा, सभी को त्याग का भाव अपनाना होगा, तब हमारा गाँव बचेगा। भारत माता की रक्षा करना है तो पर्यावरण की रक्षा करनी होगी। हम इस भारत माँ को माँ मानते हैं, क्योंकि यहाँ देवों का अवतार हुआ है। यहाँ प्रकृति ने सारी संपदा दी है, जो और देशों में नहीं है। हम हिंदू हैं, हम प्राणियों में सद्भावना, विश्व का कल्याण चाहते हैं। हम अकेले एक गाँव एक जाति और एक परिवार का कल्याण नहीं सारे विश्व के कल्याण की कामना करते हैं। इस अवसर पर सभी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ द्वारा समाज परिवर्तन के लिए पंच परिवर्तन का जो अहवान किया है, उसका संकल्प लिया और कहा की जात–पात की करो विदाई हिंदू हम सब भाई–भाई। इस अवसर पर शोभायात्रा निकाली गई, जो ग्राम के मंदिर होते हुए सम्मेलन प्रांगण में आई, जहाँ गौ माता की पूजन की गई।

deepakmishravhp@gmail.com

ललित गर्ग

दुनियाँ जल के वैश्विक दिवालियापन की ओर बढ़ रही है

"जल है तो जीवन है"—यह पंक्ति कोई नारा भर नहीं बल्कि मानव सभ्यता का शाश्वत सत्य है। बिना जल के जीवन की कल्पना भी संभव नहीं। किंतु विडंबना यह है कि जिस जल को हम जीवन का आधार मानते हैं, वही आज सबसे अधिक संकटग्रस्त संसाधन बन चुका है। देश–दुनियाँ में जल संकट के हालात विकराल हो चुके हैं और यह संकट अब केवल प्राकृतिक नहीं बल्कि मानवीय लापरवाही, भ्रष्टाचार और मूल्यहीन शासन का भी परिणाम बनता जा रहा है। विश्व स्तर पर लगभग 25 देश अत्यधिक जल तनाव से जूझ रहे हैं। चार अरब से अधिक लोग वर्ष में कम से कम एक माह पानी की गंभीर कमी का सामना करते हैं। मध्य पूर्व, उत्तरी अफ्रीका और दक्षिण एशिया जैसे क्षेत्र इस संकट की अग्रिम पंक्ति में खड़े हैं। भारत भी इससे अछूता नहीं है। यहाँ 60 करोड़ से अधिक लोग उच्च जल तनाव वाले क्षेत्रों में रहते हैं। राजस्थान, महाराष्ट्र, पंजाब, हरियाणा और तमिलनाडु जैसे राज्य सबसे अधिक प्रभावित हैं, जबकि चेन्नई, बेंगलूरु और दिल्ली जैसे महानगरों में पानी की कमी रोजमर्रा की समस्या बन चुकी है।

दरअसल जल संकट अब 'वाटर स्ट्रेस' से आगे बढ़कर 'ग्लोबल वाटर बैंक्रप्सी' यानी दुनियाँ जल के वैश्विक दिवालियेपन की ओर बढ़ रही है। स्थिति यह है कि जल स्रोतों का दोहन इतनी तीव्रता से हो रहा है कि उनकी प्राकृतिक भरपाई असंभव होती जा रही है। भूजल स्तर निरंतर गिर रहा है, नदियाँ सूख रही हैं और तालाब अतिक्रमण की भेंट चढ़ रहे हैं। यह संकट केवल पर्यावरणीय नहीं बल्कि सामाजिक, आर्थिक और नैतिक संकट भी है। जल संकट का सीधा प्रभाव अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है। कृषि, उद्योग और ऊर्जा–तीनों ही क्षेत्र पानी पर निर्भर हैं। जब खेतों को पानी नहीं मिलता, उद्योग ठप होते हैं और बिजली उत्पादन प्रभावित होता है, तो देश की जीडीपी में 6 प्रतिशत तक की कमी का खतरा उत्पन्न हो जाता है। आमजन के लिए यह संकट जीवन और मृत्यु के बीच का अंतर बन जाता है। जहाँ पानी पर्याप्त है, वहाँ बर्बादी हो रही है और जहाँ पानी की सबसे अधिक आवश्यकता है, वहाँ लोग बूंद–बूंद को तरस रहे हैं।

भारत सरकार ने प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में जल संरक्षण को राष्ट्रीय प्राथमिकता का विषय बनाया है। जल जीवन मिशन, अटल भूजल योजना और प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना जैसे कार्यक्रम इसी दिशा में ऐतिहासिक पहल हैं। जल जीवन मिशन का लक्ष्य हर घर तक नल से जल पहुँचाना है ताकि स्वच्छ और सुरक्षित पेयजल सुनिश्चित किया जा सके। अटल भूजल योजना भूजल के सतत प्रबंधन और सामुदायिक सहभागिता पर केंद्रित है। प्रधानमंत्री कृषि सिंचाई योजना "हर खेत को पानी" के संकल्प को साकार करने का प्रयास है। इसके साथ ही जल शक्ति अभियान के तहत वर्षा जल संचयन, जल संरक्षण और जनभागीदारी पर विशेष जोर दिया गया। इन योजनाओं ने निश्चित रूप से जल संरक्षण के प्रति राष्ट्रीय चेतना को जाग्रत किया है। कई क्षेत्रों में वर्षा जल संचयन संरचनाएँ बनी हैं, ड्रिप और स्प्रिंकलर सिंचाई को बढ़ावा मिला है और भूजल पुनर्भरण के प्रयास

जल संकट अब 'वाटर स्ट्रेस' से आगे बढ़कर 'ग्लोबल वाटर बैंक्रप्सी' यानी दुनियाँ जल के वैश्विक दिवालियेपन की ओर बढ़ रही है। स्थिति यह है कि जल स्रोतों का दोहन इतनी तीव्रता से हो रहा है कि उनकी प्राकृतिक भरपाई असंभव होती जा रही है।

हुए हैं। लेकिन इस सकारात्मक तस्वीर के पीछे एक कड़वी सच्चाई भी छिपी है–प्रशासनिक भ्रष्टाचार। यही वह दीमक है जो इन योजनाओं की उपयोगिता और प्रासंगिकता को नष्ट कर रही है, उन्हें मूल्यहीन बना रही है।

जल संकट से जुड़ी योजनाओं में भ्रष्टाचार कई रूपों में दिखाई देता है–घटिया निर्माण, फर्जी आँकड़े, अधूरी परियोजनाएँ, कमीशनखोरी और जवाबदेही का अभाव। कहीं कागजों में ही वर्षा जल संचयन संरचनाएँ बन जाती हैं, तो कहीं पाइपलाइन बिछाने में घटिया सामग्री का उपयोग होता है। कई स्थानों पर योजनाओं का लाभ वास्तविक जरूरतमंदों तक पहुँच ही नहीं पाता। परिणाम यह होता है कि करोड़ों रुपये खर्च हो जाते हैं, लेकिन न पानी मिलता है और न संकट कम होता है। भ्रष्टाचार केवल धन की बर्बादी नहीं करता, वह भविष्य की पीढ़ियों का अधिकार भी छीन लेता है। इन जटिल होती जल संकट स्थितियों के प्रति नहीं चेते तो आने वाली पीढ़ियों को बूंद–बूंद के लिये तरसना पडेगा। जल जैसे जीवनदायी संसाधन के साथ किया गया भ्रष्टाचार वास्तव में मानवता के साथ अपराध है। जब जल संरक्षण की योजनाएँ कागजों में सिमट जाती हैं, तब जल संकट और भी गहरा हो जाता है। यही कारण है कि आज योजनाएँ तो हैं, नीतियाँ भी हैं, लेकिन परिणाम अपेक्षित नहीं हैं। इसके साथ ही जलवायु परिवर्तन, अतिदोहन, अनियंत्रित शहरीकरण और खराब प्रबंधन इस संकट को और बढ़ा रहे हैं। नदियों के प्राकृतिक प्रवाह को रोका गया, तालाब पाट दिए गए और जंगलों का विनाश किया गया। परिणामस्वरूप वर्षा का पैटर्न बदल गया और जल स्रोत सूखते चले गए। यह स्पष्ट है कि केवल सरकारी योजनाओं से ही समाधान संभव नहीं, जब तक समाज स्वयं जिम्मेदारी न ले।

दुनियाँ के अन्य देशों से हमें बहुत कुछ सीखने की आवश्यकता है। इजराइल में ड्रिप इरिगेशन और डिसेलिनेशन तकनीक से 90 प्रतिशत तक पानी का पुनर्चक्रण किया जा रहा है। ऑस्ट्रेलिया में वाटर ट्रेडिंग के माध्यम से जल संसाधनों का न्यायसंगत वितरण सुनिश्चित किया गया है। अमेरिका में अपशिष्ट जल का पुनः उपयोग और यूरोप में स्मार्ट वाटर मैनेजमेंट सिस्टम जल संकट से निपटने के प्रभावी उपाय बने हैं। भारत में भी राजस्थान जैसे राज्यों में जोहड़, खादिन और बावड़ियों जैसे पारंपरिक जल संरचनाएँ आज भी प्रेरणा का स्रोत हैं। समाधान का रास्ता स्पष्ट है–कठोर नीतियाँ, पारदर्शी प्रशासन और जनभागीदारी। जल संरक्षण से जुड़ी योजनाओं में भ्रष्टाचार के प्रति 'जीरो टॉलरेंस' नीति अपनानी होगी। तकनीक का उपयोग कर निगरानी और सामाजिक ऑडिट को अनिवार्य बनाना होगा। आमजन को भी जागरूक होना पड़ेगा कि वर्षा जल संचयन, जल की बचत, ड्रिप सिंचाई और अपशिष्ट जल का पुनः उपयोग केवल विकल्प नहीं, बल्कि आवश्यकता हैं।

भारत में विश्व की कुल आबादी का लगभग 18 प्रतिशत हिस्सा निवास करता है, जबकि देश में पीने योग्य जल संसाधनों का मात्र 4 प्रतिशत भाग ही उपलब्ध है। देश में अत्यधिक जल दोहन तथा अकुशल प्रबंधन के कारण भू–जल स्तर में निरंतर गिरावट आ रही है। इसके परिणामस्वरूप आने वाले समय में देश को गंभीर जल संकट का सामना करना पड़ सकता है। नीति आयोग के अनुसार वर्तमान में स्वच्छ जल की अपर्याप्त पहुँच के कारण लगभग 60 करोड़ भारतीय गंभीर जल संकट का सामना कर रहे हैं तथा इसके कारण प्रतिवर्ष लगभग 2 लाख लोगों की मृत्यु होती है। वर्ष 2030 तक देश में जल की मांग, आपूर्ति से दोगुनी होने की संभावना है। इससे देश में करोड़ों लोगों को जल के गंभीर संकट का सामना करना पड़ेगा तथा देश के सकल घरेलू उत्पाद में 6 प्रतिशत की हानि होने की संभावना है। आज समय बहुत कम है। यदि अभी भी हम नहीं चेते, तो आने वाली पीढ़ियाँ हमें कभी माफ नहीं करेंगी। जल का संकट केवल वर्तमान का नहीं, भविष्य का प्रश्न है। जल है तो जीवन है–इस सत्य को हमें व्यवहार में उतारना होगा। भ्रष्टाचार मुक्त जल प्रबंधन, जिम्मेदार प्रशासन और जागरूक नागरिक ही हमें इस 'जल–संकट' से बचा सकते हैं, अन्यथा वह दिन दूर नहीं जब इतिहास गवाह बनेगा कि मानव ने अपने ही हाथों से जीवन के स्रोत को नष्ट कर दिया। भू–जल प्रबंधन, कुशल सिंचाई प्रबंधन एवं वर्षा जल संचयन उपायों को अपनाकर भविष्य के जल संकट को कम किया जा सकता है।

lalitgarg11@gmail.com

असमय होता हृदयाघात

— संजय सक्सेना, लखनऊ

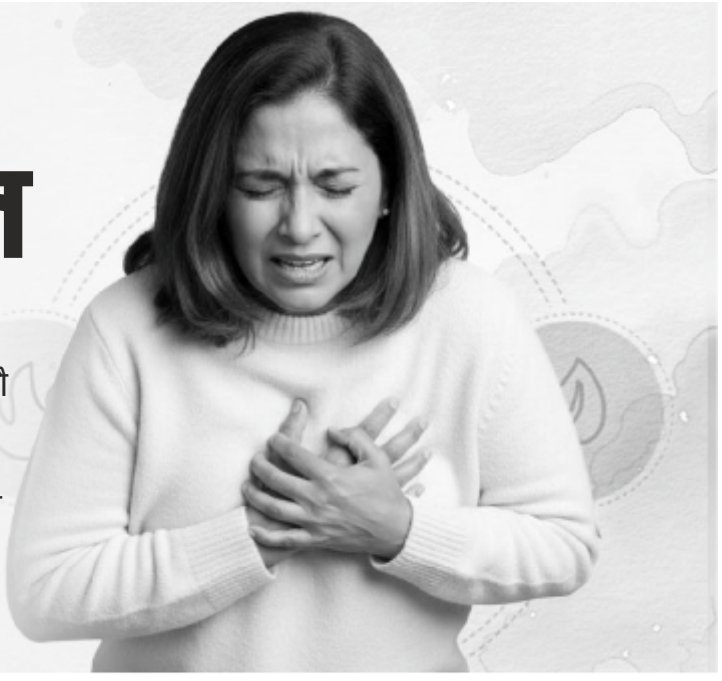

अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली ने तीन सौ से अधिक मामलों की जांच की, जिसमें शव-परीक्षण से साबित हुआ कि कोरोना टीके और अचानक हृदय गति रुकने का कोई संबंध नहीं है। डॉक्टर करण मदन ने स्पष्ट कहा कि टीके ने वास्तव में मौतों को कम किया, जबकि युवाओं में हृदय समस्याएँ जीवनशैली और अन्य कारकों से उपजी हैं।

आजकल छोटे–छोटे बच्चे और युवा तक आश्चर्यजनक रूप से चुपचाप हृदयाघात के शिकार होकर जान गँवा रहे हैं, जिससे समाज में भय का माहौल बन गया है। विपक्षी दलों के नेता इन मौतों को कोरोना काल में लगे टीके से जोड़ रहे हैं और आरोप लगा रहे हैं कि मोदी सरकार ने पर्याप्त जांच–पड़ताल के बिना टीकाकरण अभियान चलाया था; लेकिन विशेषज्ञों का मत इससे बिल्कुल उलट है, वे खराब जीवनशैली, प्रदूषण और अनुवांशिक कारणों को मुख्य दोषी मानते हैं, जबकि टीके का कोई सीधा संबंध नहीं पाया गया। भारत में युवाओं में चुपचाप हृदयाघात के मामले तेजी से बढ़ रहे हैं। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आँकड़ों के अनुसार, पिछले कुछ वर्षों में तीस साल से कम उम्र वालों में ऐसी मौतें चालीस प्रतिशत तक बढ़ गई हैं। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान और भारतीय चिकित्सा अनुसंधान परिषद की संयुक्त जांच में पाया गया कि अठारह से पैंतालीस साल के युवाओं की अचानक मौतों में 42 प्रतिशत मामलों में हृदय रोग ही कारण था, जिसमें बायीं अगली उतरने वाली धमनी में 70 प्रतिशत से अधिक रुकावट मिली। अधिकांश पीड़ित घटना से ठीक पहले पूरी तरह स्वस्थ दिखाई देते थे, क्योंकि यह रोग चुपचाप बढ़ता रहता है और कोई स्पष्ट चेतावनी नहीं देता। दक्षिण एशियाई लोगों में पचास साल से पहले हृदयाघात का खतरा पश्चिमी लोगों की तुलना में तीन–चार गुना अधिक होता है, जो आनुवंशिक संरचना से जुड़ा है।

टीके के आरोपों पर विशेषज्ञों की राय एकमत है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, दिल्ली ने तीन सौ से अधिक मामलों की जांच की, जिसमें शव–परीक्षण से साबित हुआ कि कोरोना टीके और अचानक हृदय गति रुकने का कोई संबंध नहीं है। डॉक्टर करण मदन ने स्पष्ट कहा कि टीके ने वास्तव में मौतों को कम किया, जबकि युवाओं में हृदय समस्याएँ जीवनशैली और अन्य कारकों से उपजी हैं। पूर्व अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान निदेशक डॉ. रणदीप गुलेरिया ने भी सोशल मीडिया की अफवाहों को भ्रामक करार दिया। पीएसआरआई हृदय संस्थान के अध्यक्ष डॉ. केके तलवार ने जोर दिया कि इनमें टीके का कोई प्रमाण नहीं मिला, बल्कि अनजानी धमनी रुकावट ही प्रमुख वजह है। कुछ विदेशी अध्ययनों में टीके के दुष्प्रभाव का जिक्र है, लेकिन भारत के संदर्भ में ये दावे खारिज हो चुके हैं। इन मौतों के पीछे कई कारण कार्यरत हैं। सबसे बड़ा कारण खराब जीवनशैली है, जिसमें बाहर का तला–भुना खाना, अधिक नमक युक्त भोजन, मोटापा, मधुमेह और उच्च रक्तचाप शामिल हैं। प्रसिद्ध हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. नरेश त्रेहान कहते हैं कि तनाव, तेज चलने वाली जिंदगी और प्रदूषण हृदय को चुपचाप नुकसान पहुँचा रहे हैं। दूसरा प्रमुख कारण वायु प्रदूषण है, खासकर दिल्ली जैसे शहरों में, जहाँ सूक्ष्म कण रक्तप्रवाह में घुसकर धमनियों में जमाव बनाते हैं, जिससे हर दस इकाई वृद्धि पर हृदयाघात का खतरा ढाई प्रतिशत बढ़ जाता है। तीसरा अनुवांशिकता, जो दक्षिण एशियाई नस्ल में कम उम्र से धमनी रोग को बढ़ावा देती है। इसके अलावा धूम्रपान, शराब, नशीले पदार्थ, कम नींद, व्यायाम की कमी और देर से पता चलना भी जिम्मेदार हैं। युवा जिम जाते हैं, लेकिन अतिरिक्त व्यायाम या नकली दवाओं से खतरा और बढ़ जाता है।

चुपचाप हृदयाघात के लक्षण भी नजरअंदाज हो जाते हैं। सीने में तेज दर्द न होने पर थकान, सांस लेने में तकलीफ, पेट खराबी, जबड़े या पीठ में दर्द तथा ठंडा पसीना सामान्य समझ लिया जाता है। विशेषज्ञ चेताते हैं कि युवा स्वास्थ्य जांच टालते हैं, इसलिए उच्च वसा या रक्तचाप की समस्या देर से सामने आती है। इनसे बचाव के उपाय सरल लेकिन प्रभावी हैं। सबसे पहले

नियमित जांच करवाएँ, तीस साल से ऊपर वालों को रक्तचाप, मधुमेह तथा वसा की जांच अनिवार्य हो, विशेषकर यदि परिवार में हृदय रोग का इतिहास हो। दूसरा, स्वस्थ भोजन अपनाएँ, जिसमें फल और सब्जियाँ अधिक हों तथा तेल, मसाले और नमक कम। तीसरा प्रतिदिन तीस से पैंतालीस मिनट पैदल चलें, योग या प्राणायाम करें। चौथा, बुरी आदतें त्यागें जैसे धूम्रपान, तंबाकू तथा शराब। पांचवाँ, तनाव नियंत्रित रखें, ध्यान या अच्छी नींद से। प्रदूषण से बचाव के लिए मास्क लगाएँ, उच्च प्रदूषण सूचकांक पर घर में रहें तथा शुद्धिकरण यंत्र का उपयोग करें। डॉ. संदीप बंसल के अनुसार सूक्ष्म कण वसा को प्रभावित कर जमाव बनाते हैं, इसलिए सावधानी बरतें। आवश्यकता पर चिकित्सक द्वारा दी गई दवाएँ, जैसे रक्तचाप नियंत्रक लें। हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. उपेंद्र कौल कोरोना के बाद हृदय जांच की सलाह देते हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि जागरूकता ही सबसे बड़ा हथियार है। अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान के अध्ययन से पता चलता है कि

समय पर पता चलने से 80 प्रतिशत मामले रोके जा सकते हैं। सरकार को जागरूकता अभियान चलाना चाहिए, लेकिन व्यक्तिगत स्तर पर जीवनशैली में बदलाव अनिवार्य है। युवा पीढ़ी को सतर्क होना होगा, वरना यह समस्या महामारी का रूप ले सकती है। डॉ. सुधीर गुप्ता जैसे फोरेंसिक विशेषज्ञ परिवारजन की जांच पर जोर देते हैं, क्योंकि चुपचाप रोग धीरे–धीरे फैलता है। निष्कर्षतः टीके की अफवाहें निराधार हैं, असली शत्रु हमारी लापरवाही है। समय रहते सुधार करें, तो हृदय सुरक्षित रहेगा।

skslko28@gmail.com

अशोकनगर कदवाया मंडल में हिंदू सम्मेलन

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शताब्दी के अवसर पर हिंदू सम्मेलन कदवाया मंडल में संपन्न हुआ, जिसमें मुख्य वक्ता विश्व हिंदू परिषद प्रांत अर्चक मंदिर संपर्क प्रमुख डॉ दीपक मिश्रा ने कहा कि संघ शताब्दी वर्ष में हिंदू समाज की विषमताओं को दूर करने के लिए पंच परिवर्तन का समाज में आह्वान कर रहा है। स्वयं में परिवर्तन होगा तब समाज में परिवर्तन होगा। हमारा भौतिक शरीर भी पांच तत्वों से बना है और हमारे पूर्वज जहाँ पाँच लोग बैठकर जो निर्णय करते थे, वह सर्व मान्य होता था। ऐसा कहते हैं कि पंच परमेश्वर पाँच जनों के निर्णय में परमात्मा का वास होता है, इसलिए पंच परिवर्तन हमारे जीवन के लिए बहुत महत्वपूर्ण है और सनातन हिंदू धर्म की रक्षा के लिए भी महत्वपूर्ण है, इसमें हमारे कुटुंब पाश्चात्य प्रकृति के कारण छोटे होते जा रहे हैं। हमारी डेमोग्राफी बदल रही है, इसलिए कुटुंब को बचाना है, तो परिवार को संगठित कर एक साथ बैठकर मनमुटाव को दूर कर कुटुंब को बढ़ाना होगा। दूसरा हमारे समाज में सबसे बड़ी विषमता सामाजिक समरसता की है, हम जातियों के नाम से बंट रहे हैं। राष्ट्र विरोधी ताकतें जात–पात के नाम से हमारा विभाजन करा कर समाज को कमजोर करना चाहते हैं, इसलिए समाज को एक सूत्र में बांधना है।

प्रयागराज कुंभ में 60 करोड़ लोगों ने स्नान किया, किसी की जात नहीं पूछी गई, यह राष्ट्र विरोधी तत्व छुआछूत जात–पात के नाम से हिंदू को बांटना चाहते हैं। पर्यावरण की रक्षा के लिए हम भारत माता का पूजन करते हैं। इसकी प्राकृतिक रक्षा करना होगी, हमें पेड़ लगाना होगा। हमें प्लास्टिक का उपयोग नहीं करना है, जल को बचाना होगा, पर्यावरण बचेगा तब भारत माँ की रक्षा होगी। हमें स्वदेशी का पालन करना होगा, तभी हमारा देश मजबूत होगा।

इस अवसर पर देश की परिस्थितियों पर चिंतन किया गया। राष्ट्र विरोधी ताकत है जो जिहाद के माध्यम से देश को तोड़ना चाहते हैं, उनसे सावधान होना पड़ेगा। हमारे पूर्वजों ने धर्म के लिए जो बलिदान दिया है, गुरु गोविंद सिंह का बलिदान गुरु तेग बहादुर सिंह जी के बलिदान को भुलाया नहीं जा सकता। आज हमारे देश के 100 जिले ऐसे हैं, जहाँ हिंदू अल्पसँख्यक हो गया हैं, यह चिंता का विषय है, इसलिए हमें संगठित होना है। निजी स्वार्थ को छोड़कर राष्ट्र की रक्षा के लिए चिंतन करेंगे, तभी अगली पीढ़ी सुरक्षित होगी।

deepakmishravhp@gmail.com

दक्षिण के ऐतिहासिक कुंभ में 250 साल बाद जुटे लाखों श्रद्धालु, क्या है निहितार्थ?

रवि पाराशर

केरल में मलप्पुरम जिले के तिरुनावया में भरतपुझा नदी (इसे दक्षिण गंगा भी कहा जाता है) के तट पर कम से कम 250 साल बाद आयोजित 18 दिन चला महामाघम यानी मामंकम उत्सव गत तीन फरवरी को संपन्न हो गया। पिछले साल प्रयागराज में जनवरी–फरवरी में हुए महाकुंभ के दौरान ही दक्षिण भारत में इस कुंभ का आयोजन फिर से शुरू करने का संकल्प लिया गया था। महाकुंभ में ही जूना अखाड़े के प्रमुख संन्यासी स्वामी आनंदवन भारती महाराज को दक्षिण भारत के लिए महामंडलेश्वर या अखाड़ा प्रमुख का दायित्व सौंपा गया था। दक्षिण भारत के इस 18 दिवसीय कुंभ को फिर से शुरू करने का विचार उनका ही था। उनकी देखरेख में ही मामंकम उत्सव आयोजित किया गया। ध्यान देने वाली बात यह है कि पढ़ाई के दिनों में स्वामी आनंदवन सीपीआई (एम) के छात्र संगठन से जुड़े रहे हैं। मेले की सबसे बड़ी बात यह है कि आयोजन करीब ढाई सौ वर्षों बाद पुनर्जीवित किया गया है। बंद होने से पहले मामंकन उत्सव हर 12 साल में सनातन परंपरा के साथ बहुत धूमधाम से मनाया जाता था। इस दृष्टि से देखें तो स्पष्ट है कि प्राचीन भारतीय संप्रभुता के मूर्त विचार अर्थात सामूहिक भारतीय गणतंत्र की भावना में व्याप्त परंपरागत सामाजिक–साँस्कृतिक औदार्य की स्वीकृति हर दिशा में एक समान ही थी। पूर्व–पश्चिम और उत्तर–दक्षिण में निभाई जाने वाली साँस्कृतिक परंपराओं में पूरी तरह साम्य था। राजाओं के शासन के भू–भाग भले ही अलग–अलग थे, लेकिन हर राज्य के राजा और प्रजा साँस्कृतिक रूप से एक जैसी परंपराओं का ही निर्वाह करते थे।

'मुगलों और अँग्रेजों ने किए हिंदू व्यवस्थाओं पर प्रहार'

अँग्रेज शासन आने के बाद से विभाजन की राजनीति पनपने पर जैसा वातावरण आज अनुभव होता है, वैसा पुराने समय में नहीं था। सिर्फ दक्षिण की ही बात करें, तो दक्षिण में आक्रांताओं पर हमले 1296 से 1311 तक अलाउद्दीन खिलजी ने शुरू किए। इसके बाद 1328–1342 तक दिल्ली की तुगलक सल्तनत और 1680 के बाद औरंगजेब ने दक्कन का युद्ध किया। इसके बाद 1766 से लेकर 1792 तक मैसूर के शासक हैदर अली और टीपू सुल्तान के मालाबार (केरल) पर अंकुश कायम किया। हैदर और टीपू ने अपने शासन की सीमाओं का विस्तार ही नहीं किया, बल्कि हिंदुओं की सामान्य समाज व्यवस्था, जैसे मंदिर अर्थव्यवस्था, अनुष्ठान केंद्रों और भूमि अनुदान प्रणालियों को नष्ट–भ्रष्ट कर दिया।

इसके बाद अँग्रेजी शासन आने के बाद बहुत कुछ सायास बदल दिया गया। अँग्रेजों ने मामंकन उत्सव के आयोजन पर रोक लगा दी। बहुत चतुराई से अँग्रेजों ने हिंदू जीवन मूल्यों, पद्धतियों, परंपराओं को सिर्फ धर्म के अनुपालन के तौर–तरीकों और कर्म–कांडों तक ही सीमित कर दिया। समाज और राज व्यवस्था को चलाने वाली शक्ति से उन्हें पूरी तरह वंचित कर दिया गया। लेकिन अब करीब ढाई सौ साल बाद केरल की पुरानी परंपरा पुनर्जीवित हुई है, तो हर भारतीय को इस पर गर्व होना चाहिए।

'लेफ्ट को दिख रहा है सनातन का उभार?'

दक्षिण के कुंभ के आयोजन की दूसरी बड़ी बात यह रही कि केरल सरकार ने थोड़ी बहुत ना–नुकुर के बाद आयोजन के प्रति लचीला रुख अपनाते हुए बड़े अड़ंगे नहीं डाले। व्यवस्थाएँ बनाने में रुचि भी दिखाई। फिर ऐसा भी है कि जहाँ देश–विदेश के लाखों लोग (श्रद्धालु) जुटने हों, वहाँ व्यवस्था बनाने की जिम्मेदारी प्रशासन को करनी ही होगी। ऐसा करना प्रशासनिक विवशता भी है ही।

परंतु वस्तुस्थिति यह है कि केरल विधानसभा का कार्यकाल आगामी मई महीने में खत्म होने वाला है। उससे पहले वहाँ चुनाव होने हैं। ऐसे में केरल की वामपंथी सरकार ने मामंकम उत्सव के रूप में ऐतिहासिक पहल की राह में रोड़े क्यों नहीं बिछाए, यह प्रश्न महत्वपूर्ण हो जाता है। केरल में करीब 55 प्रतिशत मतदाता हिंदू हैं, बावजूद इसके वहाँ लेफ्ट और कॉंग्रेस का ही दबदबा रहता आया है। क्या महत्वपूर्ण प्रश्न का एक उत्तर यह हो सकता है कि लेफ्ट को भी अब सनातन के उभार का शिखर थोड़ा–बहुत ही सही, दिखाई देने लग गया है?

लेफ्ट पार्टियाँ क्या अब मानने लगी हैं कि भारतीय राजनीति में बदलते समीकरणों के दौर में हिंदू परंपराओं का विरोध मात्र ही सेक्युलर सोच है, यह परिभाषा अब मान्यता खो चुकी है ? क्या लेफ्ट को लग रहा है कि सत्ता प्राप्ति के मूल मंत्र मुस्लिम तुष्टीकरण से तंग आकर अब हिंदू भी एकजुट हो रहे हैं या केरल के संदर्भ में एकजुट होने की सोचने लगे हैं?

'भगवा ही लाल रंग की अंतिम परिणति'

स्पष्ट है कि लाल रंग के कुटुंब में भगवा रंग ही ऊर्जा का सर्वाधिक प्रखर रूप है, कम से कम भारत भर में यह स्वीकार करने का सबसे सही समय आ गया है। एक और बड़ी बात दक्षिण के कुंभ में यह समझ में आई है कि युवा पीढ़ी अब भारतीय सनातन मूल्यों से फिर से जुड़ने लगी है। मामंकम उत्सव में बड़ी सँख्या में युवा शामिल हुए।

'जड़ों की ओर लौट रहे हैं भारतीय युवा'

इससे पहले हम देख चुके हैं कि नए अँग्रेजी साल के अंतिम और पहले दिन बड़ी सँख्या में युवा भारतीय श्रद्धा के विभिन्न केंद्रों मंदिरों, देवालयों और पवित्र स्थलों पर उमड़े थे। इससे भी पहले प्रयागराज महाकुंभ में युवा बहुत बड़ी सँख्या में संगम में डुबकी लगाते दिखे थे। दक्षिण में कुंभ का एक और आयोजन होता है। तमिलनाडु के कुंभकोणम जिले में अगला कुंभ यानी महामहम फरवरी–मार्च 2028 (तमिल माह मासी) में आयोजित होने की संभावना है। तब गुरु, सिंह राशि में प्रवेश करेंगे।

murari.shukla@gmail.com

दिमाग को मजबूत करने के उपाय

– मुरारी शरण शुक्ल

नासिका से बाहर निकलने वाली वायु को प्राण कहा जाता है। नासिका से भीतर जाने वाली वायु को अपान कहा जाता है।

प्राणापानौ समौ कृत्वा नासाभ्यन्तरचारिणौ।

(श्रीमद्भगवत गीता ५/२७)

सामान्यतः प्राणवायु की गति दीर्घ और अपान वायु की गति लघु होती है। इन दोनों की गति समान कर लेने से मन की शक्ति अपने आप बढ़ने लग जाती है। इसके लगातार सम अवस्था में बने रहने से आपके मस्तिष्क की सोंच और गति सकारात्मक होने लगती है, सफलता की ओर उन्मुख होने लगती है, परमात्मा अर्थात् परम सत्य, परम सफलता की ओर आपको ले जाने लगती है।

आपका मस्तिष्क इस अभ्यास से शक्तिशाली होने लग जाता है। स्मरण शक्ति बहुत तेजी से बढ़ने लग जाती है। इससे आपका क्रोध कम होने लग जाता है, मन शांत रहने लग जाता है, उन्माद और उद्वेग घटने लग जाता है। मानसिक रोग ठीक होने लग जाता है।

विगतेच्छाभयक्रोधो

(श्रीमद्भगवत गीता ५/२८)

प्राण और अपान दोनों को सम करने के बहुत से अभ्यास हैं, उपाय हैं। उचित समय पर सोने, जगने, खाने–पीने, सकारात्मक सोंचने, सब विकारों से बचने, सबका भला और अच्छा सोंचने, प्रिय सत्य बोलने से भी यह सम होने लग जाता है। योग–प्राणायाम करने से भी यह होता है। लेकिन सर्वाधिक लाभ होता है : अनुलोम–विलोम–प्राणायाम करने से। नित्य प्रति करें। नियत समय पर, नियत काल तक करें। परिणाम स्वयं दिखाई देगा। ठीक विधि से सीखें, करने आता हो तभी करें, अन्यथा हानी भी हो जाती है।

murari.shukla@gmail.com

स्वयं को बेचैन, विक्षिप्त और विकल होने से बचाएँ

मनः प्रकाश संमोह स्वप्न जाड्न्य विवर्जितः।
दशां कामपि संप्राप्तो भवेद् गलितमानसः।।

(अष्टावक्र गीता 17/20)

जिस व्यक्ति का मन छंद–विचार, नैरेटिव–विमर्श, सोच–तनाव–क्लेश, क्रोध–छल–षड्यन्त्र, धोखा–अल तकिया–हिकमा इत्यादि नकारात्मक कल्पनाजन्य अवास्तविक बातों में प्रवृत्त हो गया अर्थात् अत्यंत चंचल, विचलित हो गया (चित्त–की–चंचलता : मनः–प्रकाश), अज्ञान, मोह–माया, मेरा–तेरा, अपना–पराया, भाई–भतिजावाद, अर्जुन सिंड्रोम में घिर गया (संमोह), विषयों की कल्पना/भ्रम (स्वप्न) और जड़ता– Inertia (जाड्न्य) से ग्रस्त हो गया, तो वह मानसिक रोगों का शिकार हो जाता है।

उपचार – जो उपरोक्त बातों से पुरी तरह मुक्त हो गया, रहित हो गया (विवर्जितः), सभी दोषों से मुक्त हो गया हो, ऐसा पिघले हुए मन वाला, मुक्त मन वाला, स्वच्छ मन वाला, स्वतंत्र मन वाला, अनुशासित मन वाला, दोष रहित– निर्विकार मन वाला, परमात्मा में लीन मन वाला (गलितमानसः), ऐसा मनुष्य उस उच्च और दिव्य अवस्था में पहुँच जाता है, ऐसी दशा को प्राप्त हो जाता है (कामपि– संप्राप्तो), जिसे शब्दों में वर्णन करना असम्भव है, वह अनमोल–जिनियस हो जाता है। (अवर्णनीय–अनिर्वचणीय –कामपि–दशां)। इससे मन की शक्ति तीव्र गति से बढ़ती है।

रोग – जो उपरिवर्णित दोषों में से किसी एक में, या दो में, या तीन में, या सभी में घिर गया, धंस गया, उलझ गया, वह मन के बवंडर में फंस गया। उसका मानसिक रोगों में घिरना तय है। उसका इन व्याधियों से बचना असम्भव है। इन मानसिक दोषों के सहारे, वह स्वयं को बहुत तेज समझेगा, किन्तु वह बुद्धिमान नहीं, वह तो चालु है, अहमक है, मुर्ख है, अपना ही नाश करने में लग गया है, अपने आसपास वालों और परिवार वालों का भी सुख कम करेगा, स्वयं को बेचैन, विक्षिप्त और विकल तो बना ही सकता है। इसीलिए ऋषि अष्टावक्र के इस अनुभव का लाभ लें और मानसिक रोगों से बचें। अतः ये श्लोक अनमोल सूत्र हैं, मानसिक रोगों के उपचार का।

हेमू कालाणी के ८३वें बलिदान पर अर्पित की पुष्पांजलि

''अमर शहीद हेमू कालाणी के 83वें बलिदान दिवस के अवसर पर भगवान श्री झूलेलाल मंदिर, सेक्टर–6, जोन–64, हीरापथ, मानसरोवर जयपुर में भारतीय सिंधु महासभा के अध्यक्ष गोपालदास लालवानी की अध्यक्षता एवं विश्व हिंदू परिषद धर्मप्रसार प्रांत प्रमुख सीएम भार्गव के मुख्य आतिथ्य तथा दलीप खुशियानी के सान्निध्य में भावपूर्ण श्रद्धांजलि का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ'।

सर्व प्रथम उपस्थित बंधु भगिनी ने हेमू कालानी के चित्र को फूलमाला एवं पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि दी। मुख्य अतिथि भार्गव ने कहा कि माँ भारती को अँग्रेजों की गुलामी से मुक्ति दिलाने के लिए हजारों वीर सपूतों ने अपने प्राण न्यौछावर कर दिए, जिसमें सिंध प्रांत की भूमिका भी विशेष रही। जब भी अँग्रेजों को भारत से भगाने में अपनी शहादत देने वाले सबसे कम उम्र के हजारों वंदनीय वीरों का स्मरण किया जाएगा, तब सिंध के हेमू कालाणी का नाम भी उनमें लिया जाएगा।

सिंधी समाज के लोग हेमू कालाणी की शहादत के दिवस को सिंधी युवा दिवस के रूप में भी मनाते हैं। गोपालदास लालवानी ने अतिथियों का परिचय देते हुए हेमू कालाणी के जीवन चरित्र को विस्तार से बताया एवं सिंधु संस्कृति की महान विरासत के संरक्षण के लिए शहीदों के जीवन से प्रेरणा लेने का आह्वान किया।

cmbhargava1957@gmail.com

हिंदुओं के मन में कष्ट है कि हमारी भूमि को हमसे छीन लिया गया, संकल्प भी है कि हम इसे प्राप्त करेंगे - आलोक कुमार

धार (म.प्र.)। वसंत पंचमी के मौके पर राजा भोज बसंतोत्सव समिति ने शुक्रवार को यहाँ एक धर्मसभा का आयोजन किया। इस दौरान विश्व हिंदू परिषद के राष्ट्रीय अध्यक्ष आलोक कुमार जी ने कहा कि वर्ष 2034 में भोजशाला के निर्माण को एक हजार साल पूरे हो रहे हैं।

लंदन के म्यूजियम में माँ सरस्वती की मूर्ति है। उसे देश में वापस लाकर मूर्ति की प्राण प्रतिष्ठा करना है, मंदिर को उसकी गरिमा के अनुरूप सज्जित करना है, भोजशाला मामले में जो याचिका लगी है, उसका मुकदमा हमें जीतना है। कोर्ट में जो मुकदमा चल रहा है, उसके सभी तथ्य हमारे पक्ष में हैं। राजा भोज ने वाग्देवी का बड़ा मंदिर और गुरुकुल बनाया था। खिलजी के पहले आक्रमण में इस पर कब्जा कर लिया गया, जिसमें 1200 विद्यार्थी और शिक्षक रक्षा में मारे गए, मूर्ति को तोड़कर जमीन में दबा दिया गया और खंडित कर दिया, मंदिर की पूरी प्रकृति एक हिन्दू मंदिर की है।

murari.shukla@gmail.com

विहिप - 'मातृशक्ति/दुर्गावाहिनी' की दो दिवसीय अ.भा. बैठक

कर्णावती। विश्व हिंदू परिषद द्वारा आयोजित मातृशक्ति दुर्गावाहिनी की दो दिवसीय 'अखिल भारतीय बैठक' का आज कर्णावती के दस्कोई स्थित श्री निष्कलंक नारायण तीर्थधाम प्रेरणापीठ, पीराना में अत्यंत उत्साहपूर्ण एवं भव्य वातावरण में शुभारंभ हुआ। उद्घाटन सत्र में देश के विभिन्न क्षेत्रों से संगठन के वरिष्ठ पदाधिकारी बड़ी संख्या में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का आरंभ दीप प्रज्जवलन एवं माँ दुर्गा की स्तुति के साथ हुआ। उद्घाटन सत्र में उपस्थित संतगण स्वामी परप्रज्ञानंद सरस्वती जी (कर्णावती), विश्व हिंदू परिषद के अंतरराष्ट्रीय अध्यक्ष मा. श्री आलोक कुमार जी (दिल्ली), केंद्रीय सह संगठन महामंत्री मा. श्री विनायकराव देशपांडे (दिल्ली), केंद्रीय सहमंत्री एवं नैतिक शिक्षा प्रमुख मा. श्री गोविंद जी शिंदे, मातृशक्ति केंद्रीय संयोजिका मा. श्रीमती मीनाक्षी ताई पिशवे, केंद्रीय प्रबंध समिति सदस्य (वर्गपालक) मा. श्रीमती मीनाबेन भट्ट, केंद्रीय दुर्गावाहिनी संयोजिका मा. प्रज्ञा जी महाला, क्षेत्रीय संगठन मंत्री श्री अश्विनभाई पटेल (कर्णावती), उत्तर गुजरात प्रांत अध्यक्ष मा. श्री हर्षदभाई गिलेटवाला सहित अन्य पदाधिकारियों ने दीप प्रज्वलन कर कार्यक्रम का औपचारिक शुभारंभ किया।

उद्घाटन अवसर पर मुख्य व्यवस्था प्रमुख एवं केंद्रीय मातृशक्ति सह संयोजिका मा. श्रीमती सरोज सोनी ने कार्यक्रम की प्रस्तावना प्रस्तुत की तथा उपस्थित सभी पदाधिकारियों का आत्मीय स्वागत किया। कार्यक्रम में सर्वप्रथम मंत्रोच्चार के साथ संबोधन करते हुए साध्वीजी ने आशीर्वचन प्रदान करते हुए कहा कि शक्ति से ही जगत की उत्पत्ति और पालन होता है, शक्ति के बिना जगत की कल्पना संभव नहीं है। इतनी बड़ी संख्या में जागृत नारीशक्ति को एकत्रित देखकर उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त की और सभी बहनों से राष्ट्र निर्माण में निरंतर सक्रिय योगदान देने का आह्वान किया।

मुख्य वक्ता मा. श्री आलोकजी ने "भारत के विकास में महिलाओं का योगदान" विषय पर बहनों को संबोधित करते हुए कहा कि सामाजिक मूल्यों की रक्षा करते हुए सर्वांगीण विकास अत्यंत आवश्यक है। महिलाओं को परिवार की जिम्मेदारियाँ निभाते हुए राष्ट्र निर्माण में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए। वर्तमान समय में महिला सशक्तिकरण और आध्यात्मिक जागरूकता अत्यंत आवश्यक है। दुर्गावाहिनी के माध्यम से बहनों में साहस और सँस्कारों का संवर्धन किया जा रहा है, जो राष्ट्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए सुदृढ़ आधार सिद्ध होगा। पूरे दो दिन की बैठक में कार्य विस्तार हेतु कार्यकर्ता के दायित्व बोध, प्रवास संपर्क के साथ प्रोफेसर नवनीता ठाकुर जी द्वारा महिलाओं के परिप्रेक्ष्य में पंच परिवर्तन विषय रखा गया। समापन सत्र में निष्कलंक धाम प्रेरणा पीठ के पू .स्वामी ज्ञानेश्वर दास जी महाराज द्वारा आशीर्वचन में आज राजशाही नहीं लोकशाही से देश चल रहा है, हम अपनी सँख्या कम कर रहे हैं, विधर्मी अपनी सँख्या बढ़ा कर हमारे ऊपर जुल्म कर रहे हैं, अपने स्वार्थ के लिए वोटिंग करते हैं। अगर इस देश की सँस्कृति को हमें बचाना है, तो हमारी भी सँख्या बढ़ानी पड़ेगी, नहीं तो हमें कोई बचा नहीं सकता। मातृशक्ति दुर्गा बाहिनी द्वारा समाज में जागरण लाना है, नारी शक्ति राष्ट्र शक्ति है यह विषय रखें। राष्ट्र गीत वंदे मातरम के साथ बैठक का समापन हुआ।

इस बैठक में देशभर से दुर्गावाहिनी, मातृशक्ति, क्षेत्रीय संयोजिकाएँ, प्रांत संयोजिकाएँ, सह संयोजिकाएँ, प्रांत टोली सदस्य तथा मातृशक्ति और दुर्गावाहिनी के पालक अधिकारी सहित कुल 350 से अधिक उपस्थिति रही। सम्पूर्ण कार्यक्रम का संचालन केंद्रीय दुर्गावाहिनी सह संयोजिका मा. श्रीमती पिंकीजी पवार द्वारा किया गया। कार्यक्रम की व्यवस्थाओं के लिए स्थानीय समिति, क्षेत्रीय मातृशक्ति संयोजिका मा. श्रीमती कल्पनाबेन व्यास (कर्णावती), उत्तर गुजरात मातृशक्ति संयोजिका जवनिका बहन भट्ट (व्यवस्था सह प्रमुख), उत्तर गुजरात दुर्गावाहिनी संयोजिका श्रीमती नुपुरबेन पटेल तथा उत्तर गुजरात प्रांत सह मंत्री श्री हितेशभाई ठक्कर सहित अन्य पदाधिकारियों ने विशेष परिश्रम किया।

प्रस्तुति : जिमित शाह
सह प्रचार–प्रसार प्रमुख, उत्तर गुजरात प्रांत

अंश और अंशिका को खोजने वाले बजरंग दल कार्यकर्ताओं का सम्मान

'रामगढ़।' राजधानी राँची के धुर्वा से 2 जनवरी से लापता हुए दो मासूम भाई–बहन अंश कुमार राय और अंशिका कुमारी को खोजने में बजरंग दल के युवकों ने प्रमुख भूमिका निभाई है। दोनों मासूम बच्चों को चितरपुर प्रखंड के पहाड़िया जहाने क्षेत्र से बजरंग दल के युवक, बजरंग दल चितरपुर प्रखंड के संयोजक सचिन प्रजापति, डब्लू साहु, सन्नी नायक, राहुल कुमार, सुनील कुमार, अंशु कुमार सहित अन्य ने बुधवार को बरामद कर पुलिस को सौंपा। बजरंग दल के युवकों को सम्मानित करने के लिए विश्व हिंदू परिषद के द्वारा गुरुवार को रामगढ़ में सम्मान समारोह का आयोजन किया गया।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से विश्व हिन्दू परिषद प्रांत अध्यक्ष चंद्रकांत रायपत, प्रांत कार्यकारी अध्यक्ष तिलक राज मंगलम, प्रांत मंत्री मिथिलेश्वर मिश्र, प्रांत सह मंत्री मनोज पोद्दार, प्रांत संगठन मंत्री चितरंजन, बजरंग दल प्रांत संयोजक रंगनाथ महतो, प्रांत दुर्गावाहिनी संयोजिका कीर्ति गौरव उपस्थित रहे। बजरंग दल के युवकों को तिलक लगाकर, शॉल व भगवा वस्त्र ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। बजरंग दल का जयघोष, जय श्रीराम, ओम् का उच्चारण के साथ सभी युवकों का स्वागत किया गया। प्रांत अध्यक्ष चंद्रकांत रायपत ने कहा बजरंग दल का ध्येय वाक्य सेवा, सुरक्षा, संस्कार को आत्मसात कर बजरंग दल के युवा समाजहित, राष्ट्रहित के कार्य में निस्वार्थ भाव से लगे रहते हैं। इसी के परिणाम स्वरूप 12 दिन से लापता हुए बच्चों को बजरंग दल के कार्यकर्ताओं ने अभियान चला कर खोज निकाला। प्रांत मंत्री मिथिलेश्वर मिश्र ने कहा कि विश्व हिंदू परिषद ने मासिक बैठक में बच्चों की खोजबीन के लिए चर्चा कर कार्यकताओं को खोजबीन में लगाया था और सफलता भी मिली। जब भी देश और समाज को विपदा या संकट के समय विश्व हिन्दू परिषद व बजरंग दल की आवश्यकता पड़ती है, तो कार्यकर्ता हमेशा प्रथम पंक्ति में मदद के लिए खड़े रहते हैं।

बजरंग दल प्रांत संयोजक रंगनाथ महतो ने कहा कि जब उम्मीद लगी थी टूटने तब बजरंग दल बना सहारा और बच्चों को सुरक्षित खोज निकाला। जिस दिन से अंश और अंशिका लापता हुए थे, उसी दिन से उनके परिवार के लोग घर में बजरंग बली के चित्र के समीप अखंड ज्योति जलाकर रखे थे। बजरंग दल के बजरंगी के रूप में बजरंगबली साक्षात प्रकट होकर बच्चों को खोज निकाले। देश विरोधी और वामपंथी लोग बजरंग दल को हमेशा नकारात्मक रूप से प्रस्तुत करने में लगे रहते हैं, लेकिन बजरंग दल के युवा हमेशा सकारात्मक कार्य में लगे रहते हैं।

'हिन्दुत्व के विषय पर कॉन्फरेंस का आयोजन'

वल्ड एसोसिएशन ऑफ़ हिन्दू ऐकेडमीशियन्स (WAHA) एवं हेमचन्द्राचार्य उत्तर गुजरात यूनिवर्सिटी (HNGU), पाटन द्वारा संयुक्त रूप से "सर्वव्यापी हिन्दुत्वः Establishing the Hindu Narrative" विषय पर मंगलवार, 3 फरवरी 2026 को HNGU, पाटन में राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित किया गया। इस कॉन्फ्रेंन्स में 250 से अधिक अध्यापकों व शोध छात्रों ने हिस्सा लिया।

सम्मेलन में बीज वक्तव्य देते हुए, WAHA के नेशनल कोऑर्डिनेटर प्रोफेसर नचिकेता तिवारीजी (IIT-Kanpur) ने 'हिंदुत्व' की स्पष्ट व्याख्या की। उन्होने हिंदू के संस्कारों में रहे उस 'दिव्यतत्व' के 'तत्व' को ही हिंदुत्व का 'तत्व' बताया। उन्होंने अपनी बातें साहित्यिक प्रमाण व वैज्ञानिक तथ्यों के आधार पर की। प्रथम सत्र 'हिंदुत्व' के विषय का रहा। इस सत्र में प्रथम वक्ता 'साधना' सप्ताहिक के तंत्री भानुभाई चौहान ने नचिकेता जी की बातो को आगे बढ़ाया। उन्होंने अपने भाषण को हिंदू मूल्य, परंपराए और पर्यावरण को केंद्र में रख कर दिया। इसी सत्र के दूसरे वक्ता प्रोफेसर मितेश जयसवाल ने आर्य द्रविडियन थियरी, युवा व भारत केंद्रित संशोधन के विषय में बात रखी।

द्वितीय सत्र नारीशक्ति का रहा। जहाँ प्राचारिका डॉ. वृषाली जोशी और शैलजा

अंधारेजी का पाथेय मिला। तृतीय सत्र शोधपत्र प्रेजेंटेशन और उसके बाद समापन रहा। विश्वविद्यालय के कुलपति डॉक्टर किशोर पोरिया व कुलसचिव डॉक्टर रोहित देसाईजी केभी प्रासंगिक उद्‌बोधन हुए। कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए दोनों कॉर्डिनेटर प्रो. मिरा चटवानी और डॉ. राजिका कचरियाजी ने आयोजन समिति के साथ मिलकर बड़ी महनत की।

हिंदू धर्म में छुआछूत को मान्यता नहीं : विनायक देशपांडे
विश्व हिंदू परिषद ने किया समरसता गोष्ठी का आयोजन

देवास (म.प्र.)। स्वदेश समाचार देवास वर्तमान में हिंदू समाज का विखंडन करने के लिए कई हिंदू विरोधी शक्तियाँ विघटन में लगी हैं। जिस कारण हमारे ही धर्म बन्धुओं में आपस में भ्रम का निर्माण हो रहा है और आपसी दूरी बढ़ रही है। हमारे धर्म बंधु एक रहे और इस प्रकार से भ्रम निर्माण करने वाली देश व धर्म विरोधी ताकतों का सामना हमारी ही सज्जन शक्ति पूरे सामर्थ्य से करें।

इस हेतु अपने नगर में विनायक राव देशपांडे विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय सह संगठन महामंत्री के मार्गदर्शन में समरसता गोष्ठी के माध्यम से हुआ। इसमें संत धरानंद सरस्वती महाराज, दंडी स्वामी श्री राधा माधव गजानन आश्रम निवासी नेमावर, अध्यक्षता विक्रम सिंह पवार ने की। साथ में मंच पर मानसिंह बेंदिया, मुकेश सांगते, संजय जैन, मानसिंह चौहान, राजेश शर्मा आदि उपस्थित थे। कार्यक्रम की प्रस्तावना जिला मंत्री संदीप चौबे ने रखी। मुख्यवक्ता विनायक राव देशपांडे ने हिंदू समाज को हिंदू इतिहास में विभिन्न समाज, वर्ण व्यवस्था और उनके कार्यों पर तथ्यात्मक जानकारी देकर बताया कि मुगल काल में हिंदू समाज को जाति, धर्म में बांटने का कार्य तेजी से किया गया। हिंदू समाज को तोड़ने के षड्यंत्र हुए। अब उन षड्यंत्रों को समाप्त करने का समय आ गया है।

अध्यक्षीय उद्‌बोधन में विक्रम सिंह पवार ने कहा कि भारत को नंबर वन बनाने के साथ ही विश्व गुरु बनाने का समय आ गया है। मंच संचालन नारायण शर्मा ने किया। इस अवसर पर प्रांत अधिकारी खगेंद्र भार्गव, विनोद शर्मा, महेश गोठी, आरती जायसवाल, ज्योति प्रिया शर्मा, जय बच्चानी, दीपक मकवाना आदि उपस्थित थे। अंत में आभार विजय पांचाल ने व्यक्त किया।

प्रस्तुति : सचिन राठौर
प्रचार प्रचार प्रमुख

धार (म.प्र.) में महाराजा भोज स्मृति बसंतोत्सव समिति द्वारा आयोजित
अखण्ड पूजा के अवसर पर कार्यक्रम को संबोधित करते विहिप केन्द्रीय अध्यक्ष मा. आलोक कुमार जी

काशी प्रांत के मिर्जापुर विभाग की बैठक को संबोधित करते
विहिप संगठन महामंत्री श्री मिलिंद जी पराण्डे तथा बैठक में उपस्थित कार्यकर्ता

अशोकनगर के हिंदू सम्मेलन में समरसता का संकल्प

जयपुर में हेमू कालाणी के 83वें बलिदान पर अर्पित की गई पुष्पांजलि

"LPC DELHI, DELHI PSO, DELHI RMS, DELHI-6
email : hinduvishva@vhp.org
website : www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-01/4031/24-26
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
प्रकाशन तिथि :13.02.2026
प्रेषण तिथि : 14-15 (अग्रिम-पाक्षिक)

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

सत्यमेव जयते
राजस्थान सरकार

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

राजस्थान में

1 लाख सरकारी पदों की भर्ती परीक्षा का कैलेण्डर - 2026

क्र.सं.	परीक्षा का नाम	पदों की संख्या	परीक्षा माह
1	प्राध्यापक भर्ती - 2025	09	जनवरी
2	राजस्थान प्राथमिक विद्यालय अध्यापक (लेवल-I) सीधी भर्ती परीक्षा - 2025	5449	जनवरी
3	राजस्थान उच्च प्राथमिक विद्यालय अध्यापक (लेवल-II) (विज्ञान गणित) सीधी भर्ती परीक्षा - 2025	1043	जनवरी
4	राजस्थान उच्च प्राथमिक विद्यालय अध्यापक (लेवल- II) (सामाजिक अध्ययन) सीधी भर्ती परीक्षा - 2025	296	जनवरी
5	राजस्थान उच्च प्राथमिक विद्यालय अध्यापक (लेवल- II) (अंग्रेजी) सीधी भर्ती परीक्षा - 2025	221	जनवरी
6	राजस्थान उच्च प्राथमिक विद्यालय अध्यापक (लेवल- II) (हिन्दी) सीधी भर्ती परीक्षा - 2025	174	जनवरी
7	राजस्थान प्राथमिक विद्यालय अध्यापक (लेवल-I) (संस्कृत) सीधी भर्ती परीक्षा - 2025	187	जनवरी
8	राजस्थान उच्च प्राथमिक विद्यालय अध्यापक (लेवल-II) (संस्कृत) सीधी भर्ती परीक्षा - 2025	389	जनवरी
9	शिक्षा विभाग (विभिन्न पद)	10000	जनवरी - मार्च
10	सहायक विद्युत निरीक्षक भर्ती - 2025	09	फ़रवरी
11	कनिष्ठ रसायनज्ञ भर्ती - 2025	13	फ़रवरी
12	आयुष मिशन के विभिन्न पद	1548	फ़रवरी
13	सहायक अभियंता संयुक्त भर्ती - 2024 (मुख्य परीक्षा)	1014	मार्च
14	उप निरीक्षक पुलिस परीक्षा - 2025	1015	अप्रैल
15	कृषि पर्यवेक्षक सीधी भर्ती परीक्षा	1100	अप्रैल
16	पशु चिकित्सा अधिकारी भर्ती - 2025	1100	अप्रैल
17	सहायक कृषि अभियंता भर्ती - 2025	281	अप्रैल
18	प्रयोगशाला सहायक संयुक्त सीधी भर्ती परीक्षा (भूगोल)	136	मई
19	प्रयोगशाला सहायक संयुक्त सीधी भर्ती परीक्षा (विज्ञान)	668	मई
20	व्याख्याता, व्याख्याता कृषि एवं कोच संयुक्त भर्ती - 2025 (माध्यमिक शिक्षा)	3725	मई - जून
21	राजस्थान राज्य एवं अधीनस्थ सेवाएं (संयुक्त) परीक्षा	500	मई
22	महिला पर्यवेक्षक सीधी भर्ती परीक्षा	72	जून

क्र.सं.	परीक्षा का नाम	पदों की संख्या	परीक्षा माह
23	वनपाल सीधी भर्ती परीक्षा	259	जून
24	कानिस्टेबल परीक्षा	4000	जून-जुलाई
25	लिपिक ग्रेड-II/कनिष्ठ सहायक सीधी भर्ती परीक्षा	10644	जुलाई
26	वरिष्ठ अध्यापक संयुक्त भर्ती - 2025(माध्यमिक शिक्षा)	6500	जुलाई
27	कनिष्ठ विधि अधिकारी भर्ती - 2025	12	जुलाई
28	जन स्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग (विभिन्न पद)	3000	जुलाई-अगस्त
29	वरिष्ठ कंप्यूटर अनुदेशक सीधी भर्ती परीक्षा	322	अगस्त
30	बेसिक कंप्यूटर अनुदेशक सीधी भर्ती परीक्षा	2214	अगस्त
31	सांख्यिकी अधिकारी भर्ती - 2025	113	अगस्त
32	शारीरिक शिक्षा अध्यापक सीधी भर्ती परीक्षा	1079	सितम्बर
33	निरीक्षक कारखाना एवं बायलर्स भर्ती - 2025	12	सितम्बर
34	निरीक्षक कारखाना (रसायन) भर्ती - 2025	01	सितम्बर
35	सहायक निदेशक एवं वरिष्ठ वैज्ञानिक अधिकारी भर्ती - 2025	09	अक्टूबर
36	सफाई कर्मचारी भर्ती	24793	अक्टूबर
37	ऊर्जा विभाग (विभिन्न पद)	2000	अक्टूबर
38	विविध पद	6000	अक्टूबर - दिसम्बर
39	संरक्षण अधिकारी भर्ती - 2025	12	नवम्बर
40	कनिष्ठ अभियंता संयुक्त सीधी भर्ती	774	नवम्बर
41	संविदा टीचिंग एसोसिएट सीधी भर्ती परीक्षा	3500	दिसम्बर
42	ग्राम विकास अधिकारी परीक्षा	3430	दिसम्बर
43	चिकित्सा अधिकारी भर्ती	600	दिसम्बर
44	नर्सिंग एवं पैरा मेडिकल भर्ती	2000	दिसम्बर

राजस्थान संवाद

"प्रदेश के युवाओं को मेरी ओर से बहुत-बहुत शुभकामनाएं। सरकार निष्पक्ष, पारदर्शी एवं योग्यता के आधार पर भर्तियों के लिए कृतसंकल्प है। आपकी मेहनत एवं लगन, आपके और प्रदेश के उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करेगी।"

- भजनलाल शर्मा, मुख्यमंत्री

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

प्रकाशक व मुद्रक हरिशंकर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'रॉयल प्रेस' बी–82, ओखला इंडस्ट्रियल एरिया फेस–1, नई दिल्ली–110020 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : विजय शंकर तिवारी